Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 1

साविद्या

स्मारिका

वर्षः 2022 अंकः 15

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति
ग्रामः डड़ा (चम्पावत), उत्तराखंड

www.himwats.org

रजिस्ट्रेशन नं.: 758/1997-98

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 2

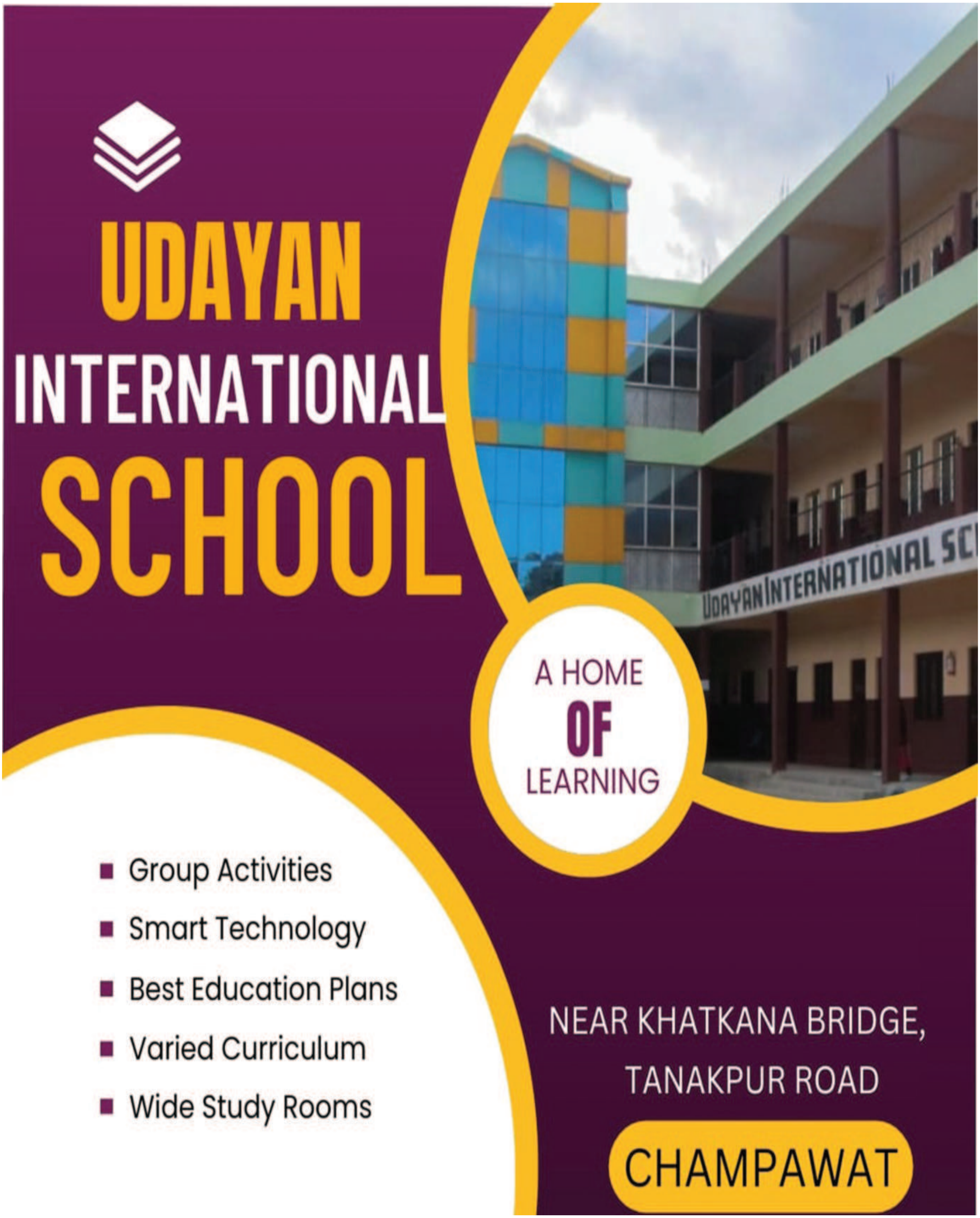

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 3

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति
ग्राम : डड़ा (चम्पावत)

ईमेल : **himwatschampawatoffice@gmail.com**
वेबसाइड : **www.himwats.org**

समिति संस्थापक : श्री त्रिभुवन कुमार बिष्ट
एमरेटस सचिव : प्रो. एच.डी. बिष्ट

सम्पादक मण्डल
श्री आशुतोष उपाध्याय
श्री चन्द्रमोहन जोशी
श्री राजेन्द्र गहतोड़ी
डॉ. बी.सी. जोशी

वित्त प्रबंधन
डॉ. जी.बी. बिष्ट
श्री के.एस. मेहरा
श्री राजेन्द्र गहतोड़ी

कार्यक्रम प्रबंधन
श्री चन्द्रमोहन जोशी
डॉ. बी.सी. जोशी

संकलन
प्रकाश पुनेठा
नीमा उपाध्याय

प्रारूप
गौरव बोहरा
पंकज बोहरा

स्मारिका डिजाइन
सीमा रावत

आवरण चित्र : साविद्या द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के चित्र

साविद्या स्मारिका-2022

वर्ष : 2022 अंक : 15

अनुक्रम

1.	सम्पादकीय	4
2.	संदेश	5-9
3.	हिमवत्स समिति	10-14
4.	उपलब्धि	15-17
5.	छात्रवृत्ति एवं दानदाता	18-21
6.	अकादमिक क्रियाकलाप	22-35
	• साइंस आउटरीच प्रोग्राम	
	• गर्ल्स इंटर्नशिप प्रोग्राम	
	• एलायंस फॉर साइंस अभियान	
	• हिमवत्स एस्ट्रोनॉमी इनिशिएटिव	
	• विविध गतिविधियां	
7.	गैर-अकादमिक क्रियाकलाप	36-42
	• साविद्या स्मारिका 2021 का विमोचन	
	• पृथ्वी दिवस समारोह	
	• अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस	
	• काला मोतिया (ग्लूकोमा) जागरूकता सप्ताह	
	• विश्व पर्यावरण दिवस 2022	
	• विश्व योग दिवस कार्यक्रम	
	• हरेला सप्ताह : बीज बॉल से हरियाली	
	• 37वां नेत्रदान पखवाड़ा	
	• जिलाधिकारी का सी.डी.एल.ए.एस.आर.सी. निरीक्षण	
	• कुलेठी विद्यालय परिसर में भवन निर्माण के प्रयास	
	• राष्ट्रीय गणित दिवस	
	• सिलाई मशीनों का अनुरक्षण	
	• हिमवत्स साविद्या ग्रामोत्थान कार्यक्रम	
	• थाल सेवा हेतु सहयोग	
8.	छात्रवृत्ति वितरण समारोह	43
9.	शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास	44-50

सम्पादकीय

शिक्षा देश के उन चुनिंदा मुद्दों में एक है, जिन पर सर्वाधिक चर्चा व चिंता जतायी जाती है। इसमें कोई शंका नहीं कि आजादी के विगत 75 वर्षों में शिक्षा का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। स्कूल में दाखिला लेने वाले बच्चों की संख्या लगभग 90 प्रतिशत के आंकड़े को पार करने वाली है। लेकिन प्रवेश लेने वाले बच्चों में बहुत कम ही उच्च शिक्षा हासिल कर पाते हैं। इतना ही नहीं उन्हें मिलने वाली शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर भी बेहद चिंताजनक स्थिति में है। सरकारी विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षकों व संसाधनों के अभाव में ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में भेजना चाहते हैं। दूसरी ओर शिक्षा के निजीकरण की बाढ़ में उपजे निजी विद्यालय दूसरी तरह की समस्याओं से ग्रस्त हैं। इनमें अधिकांश अप्रशिक्षित या अर्ध-प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित विद्यालय भी संसाधनों से वंचित हैं और उन्होंने शिक्षा को परीक्षा में ज्यादा से ज्यादा अंक लाने की दौड़ तक सीमित कर दिया है। एक संविधान सम्मत बेहतर नागरिक तैयार करने का उद्देश शिक्षा के बाजारीकरण की आंधी में कहीं पीछे छूट गया है।

केन्द्र सरकार की हालिया नई शिक्षानीति में शिक्षा की निम्न गुणवत्ता पर चिंता जताई गई है और इसे बेहतर बनाने के उपायों पर अमल करने पर जोर दिया गया है। हिमवत्स के लिए यह एक उत्साहवर्धक पहल है। साविद्या कार्यक्रम के माध्यम से हम विगत अनेक वर्षों से अपने सीमित संसाधनों के बल पर सेवित क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता सुधार कार्यक्रमों को संचालित कर रहे हैं। हमारे द्वारा चलाई जा रही ज्यादातर गतिविधियां नई शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप हैं। हिमवत्स ने ग्रामीण विद्यालयों में डिजिटल टेक्नालॉजी के माध्यम से शिक्षा को बेहतर बनाने की कवायद वर्षों पहले शुरू कर दी थी। हाल के वर्षों में हम हस्तकौशल का समावेश करने वाली विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए खोज आधारित विज्ञान शिक्षण की पद्धतियों को लोकप्रिय बनाने का प्रयास कर रहे हैं। हिमवत्स के इन प्रयासों का विद्यालयों में स्वागत किया है और जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भी अपने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन्हें शामिल कर चुके हैं।

हिमवत्स शिक्षा गुणवत्ता में सुधार के अलावा पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण निवारण एवं जन स्वास्थ्य के जुड़े सवालों पर विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। स्मारिका में हमने संस्था द्वारा वर्ष भर किए गए अपने कार्यक्रमों की एक झलक प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उम्मीद है हमारा यह प्रयास पाठकों को पसंद आएगा और वे हिमवत्स की इस पवित्र यात्रा के सहभागी बनने के लिए प्रेरित होंगे। ■

आभार

हिमवत्स (साविद्या) के समस्त सदस्यों (आशा फॉर एजूकेशन/स्माल स्टेप फाउन्डेशन), दान दाताओं, ग्राम वासियों, ग्राम सभा सदस्यों, ज्ञान क्लब के सभी सभ्रान्त व्यक्तियों, प्रशासन व सभी जन प्रतिनिधियों का, जिनके सहयोग व समर्पण से संस्था वर्तमान स्वरूप एवं प्रतिष्ठा ले पायी है।

आप सब के प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते है।

Care & Share (स्वहित रक्षा करना, परहित हिस्सा देना)

के सिद्धान्त पर निरन्तर बढ़ते हुए समिति के फलदायी संचालन की कामना करते हैं।

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 5

शुभकामना संदेश

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड
उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून-248001

उत्तराखण्ड राज्य

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति द्वारा स्मारिका ''साविद्या'' अंक-15 का प्रकाशन किया जा रहा है। संस्था द्वारा स्मारिका में विशेष रूप से कमजोर व ग्रामीण परिवेश के छात्र-छात्राओं में विज्ञान के प्रति अभिरुचि जागृत करने के लिए, इंटरनेट डिजिटल प्रोजेक्टर कम्प्यूटर विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय के साथ-साथ खेलकूद आदि क्षेत्रों में छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण व बहुमुखी विकास हेतु अनवरत कार्य किया जा रहा है। मुझे यह भी आशा है कि इस स्मारिका में संस्था द्वारा समाज हित में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों का भी उल्लेख किया जाएगा, जो निश्चित रूप से समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए अत्यन्त प्रेरणादायी सिद्ध होगा। संस्था द्वारा ऐसे उत्कृष्ट कार्यों को एक स्मारिका के माध्यम से प्रकाशित किया जाना निःसंदेह अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य है।

मेरी ओर से हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति द्वारा प्रकाशित स्मारिका ''साविद्या'' अंक-15 के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(पुष्कर सिंह धामी)
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 6

शुभकामना संदेश

नरेन्द्र सिंह भण्डारी
आईएएस
जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी
चम्पावत

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है कि हिमवत्स (हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति), डड़ा, जनपद चम्पावत द्वारा जिले में शैक्षिक गुणवत्ता की अभिवृद्धि, विज्ञान के प्रति अभिरुचि जगाने, इंटरनेट, डिजिटल डिवाइसेज, कम्प्यूटर आदि सुविधाओं को कमजोर तबकों तक पहुंचाने, तथा विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय, खेलकूद आदि क्षेत्रों में छात्र-छात्राओं लाभान्वित करने हेतु सघन प्रयास किए जा रहे हैं। इन कार्यों के अभिलेखीकरण हेतु संस्था की ओर से हमेशा की तरह इस वर्ष भी वार्षिक स्मारिका 'साविद्या' के अंक-15 का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं अपेक्षा करता हूं कि स्मारिका का यह अंक जनपद में अध्ययनरत युवाओं के साथ-साथ राजकीय विद्यालयों में पढ़ रहे आर्थिक रूप से कमजोर छात्र-छात्राओं को लाभान्वित किये जाने के प्रयासों के प्रचार-प्रसार के अलावा समाज के सभी वर्ग के लिए पठनीय एवं विचारणीय सामग्री प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध होगा। इस अवसर पर मैं हार्दिक बधाई के साथ ही स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूं।

(नरेन्द्र सिंह भण्डारी)
जिलाधिकारी चम्पावत

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 7

जितेन्द्र सक्सेना
मुख्य शिक्षा अधिकारी
जनपद चम्पावत

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति, डड़ा, चम्पावत (हिमवत्स) जनपद में वर्ष 2005 से शिक्षा क्षेत्र के उन्नयन हेतु विज्ञान प्रयोगशाला, कम्प्यूटर एवं डिजिटल शिक्षा, पुस्तकालय, अटल टिकरिंग लैब की सुविधा व जनपद के समाज सेवी लोगों को जोड़कर छात्र-छात्राओं के नवाचारी शैक्षिक क्रियाकलापों को निरंतर आगे बढ़ा रही है।

शिक्षा के सुदृढ़ीकरण की दिशा में संस्था द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना करने के साथ-साथ मैं संस्था की वार्षिक स्मारिका 'साविद्या' अंक-15 के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

(जितेन्द्र सक्सेना)
मुख्य शिक्षा अधिकारी
चम्पावत

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 8

शुभकामना संदेश

सी.एस. बिष्ट
जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.)
जनपद-चम्पावत

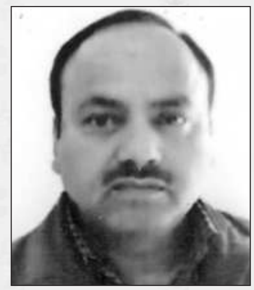

संदेश

मुझे जानकर प्रसन्नता हो रही है कि हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति (हिमवत्स), ग्राम- डड़ा चम्पावत (उत्तराखण्ड) संस्था द्वारा प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी साविद्या स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विदित हुआ है कि हिमवत्स संस्था की ओर से जनपद चम्पावत व अन्य जनपदों में सरकारी विद्यालयों के गरीब एवं पिछडे.वर्ग के छात्र-छात्राओं की शिक्षा में सुधार व विज्ञान विषय के प्रति अभिरुचि जगाने तथा कम्प्यूटर व डिजिटल उपकरणों के उपयोग के माध्यम से बच्चों को शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया जा रहा है। छात्र-छात्राओं के बहुमुखी विकास के लिए खेल-कूद का भी आयोजन संस्था द्वारा किया जाता रहा है। समिति द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे निरन्तर प्रयास सराहनीय व अनुकरणीय हैं।

(सी.एस. बिष्ट)
जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.)
चम्पावत

शुभकामना संदेश

डॉ. संजय ढींगरा
सी.ई.ओ.
आम्रपाली संस्थान, शिक्षानगर
लामाचैड़ हल्द्वानी (नैनीताल)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति (हिमवत्स) संस्था, विशेष रूप से चम्पावत जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों एवं नैनीताल तथा हल्द्वानी के निर्धन एवं मेघावी विद्यार्थियों के चतुर्मुखी विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील है। संस्था द्वारा अंगीकृत विद्यालयों के अनेक छात्र/छात्राएं विभिन्न नवोदय विद्यालयों तथा नेशनल टैलेन्ट सर्च परीक्षा में चयनित हो चुके है। संस्था द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर व मेधावी छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्तियां भी प्रदान की जा रही है।

संस्था द्वारा हर वर्ष की भांति वर्ष 2008 से प्रकाशित साविद्या स्मारिका के 15वें अंक के प्रकाशन पर मैं संस्था को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं एंव आशा करता हूं कि इसके द्वारा समस्त छात्र/छात्राओं, अभिभावकों एवं ग्रामवासियों को अमूल्य मार्गदर्शन एवं लाभ मिलेगा।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ. संजय ढींगरा)
सी.ई.ओ.
आम्रपाली संस्थान

हिमवत्स समिति

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति चम्पावत

ईमेलः himwatschampawatoffice@gmail.com (चम्पावत) himwats.office@gmail.com (हल्द्वानी)
वेबसाइडः www.himwats.org

संस्थापक/एमेरटस सचिवः प्रो. एच.डी. बिष्ट : haribist@yahoo.com मो. नं. : 8941032868
अध्यक्ष : डॉ. के.के. पाण्डे ई.मेल : pandekk@gmail.com मो. नं. : 9837016153
सचिव : डॉ. जी.बी. बिष्ट ई.मेलः gbbisht@yahoo.co.uk मो. नं. : 9412963619
उपाध्यक्ष : श्री आशुतोष उपाध्याय ई.मेलः ashu.upadhyay@gmail.com मो. नं. : 9871245557
कोषाध्यक्ष : श्री के.एस. मेहरा ई.मेलः mehrantb@yahoo.com मो. नं. : 7830599937
सदस्य : प्रो. पी.बी. बिष्ट ई.मेलः bisht@iitm.ac.in मो. नं. : 9444771994
सदस्य : डॉ. भुवन चन्द्र जोशी ई.मेलः drbcjoshi@gmail.com मो. नं. : 9411116112
सदस्य : श्री राजेन्द्र गहतोड़ी ई.मेलः rgahtori1974@gmail.com मो. नं. : 9411546795
सदस्य : श्री गणेश पन्त ई.मेलः gpant@yahoo.com मो. नं. : 8279678799

1. सोसाइटी रजि. एक्ट. क्र. 758/1997-98
2. विदेशी सहायता नियम अधिनियम के तहत पंजीकरण क्र. 347890007 दि. 23.1.2008 नवीनीकृत दि. 30-06-2027 तक
3. दर्पण नीति आयोग यूनीक आई. डी. - **UA@2016@0108076**
4. आयकर छूट-भारतीय दान दाताओं हेतु **80G** के अन्तर्गत **AAAJH0221L F20206 Date 09-07-2021 from AY 2021-22 to 2023-24.**
5. 12 एए के तहत आदेश- **AAAJH0221LF20085 Date 02-102021 from AY 2022-23 to 2026_2027.**
6. सी.एस.आर. रजि. नं.: **CSR00021627**
7. पैन रजि.- **PAN No. AAAJH0221L**

समिति के बैंक खाता ब्यौरा

Bank	SBI Champawat	SBI HLD(savidya)	SBI HLD (FCRA)	SBI Delhi (FCRA)
A/C Name	Himalaya Water Service Tatha Vikas Evam Paryavaran Sanraksha	Himalaya Water Service Tatha Vikas Avm Parya SSS Upsamit	Himalaya Water Service Tatha Vikas Avm Parya SSS Upsamit	Himalaya Water Service Tatha Vikas Avm Parya SSS Upsamit
A/C no.	10831017754	11178424017	11178424028	40106631927
CIF No.	80668886220	80957510520	80957510520	
IFSC	SBIN0001249	SBIN0000646	SBIN0000646	SBIN0000691
MICR	262002010	263002014	263002014	
SWTFT				SBININBB104
Ph. no.	05965 - 230024	05946 - 220128	05946 - 220128	011-23374390/4392/4143
Email	Sbi.01249@sbi.co.in	Sbi.00646@sbi.co.in	Sbi.00646@sbi.co.in	Fcra.00691@sbi.co.in

हिमवत्स के बारे में

एकाधिक कारणों से मध्य हिमालयी बसासतें पिछले कुछ दशकों से पानी के संकट का सामना कर रही हैं। तेजी से बढते नगरीकरण ने पानी की खपत में अभूतपूर्व वृद्धि की है। चम्पावत भी इससे अछूता नहीं है। खास तौर पर गर्मी के मौसम में पानी की किल्लत विकराल रूप धारण कर लेती है। इस समस्या के निवारण के लिए डड़ा (चम्पावत) के और वर्तमान में अमेरिकावासी श्री त्रिभुवन कुमार बिष्ट की प्रेरणा से 1997 में हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति (हिमवत्स) की स्थापना की गयी। इसके अलावा संस्था ने स्थानीय जल स्रोतों के संरक्षण, संग्रहीत पेयजल की स्वच्छता, ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के सवंर्धन तथा साधनहीन बच्चों को शैक्षिक सहायता जैसे कार्यक्रमों के संचालन का बीड़ा उठाया।

वर्ष 2004-05 में संस्था के संरक्षक एवं आईआईटी कानपुर के भौतिक विज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष प्रो. एच.डी. बिष्ट ने प्राथमिक व पूर्व माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में गुणात्मक सुधार एवं स्कूली बच्चों की स्वास्थ्य रक्षा में सहयोग हेतु 'साविद्या' उपसमिति की स्थापना की। साथ ही उन्होंने हल्द्वानी स्थित अपने आवास में संस्था के मुख्य शाखा कार्यालय का भी निर्माण कराया। वर्ष 2012 में संस्था के कार्यक्षेत्र का अखिल भारतीय स्तर पर विस्तार देने हेतु पंजीकृत कराया गया। परिणामस्वरूप हिमवत्स संस्था चम्पावत जनपद के अन्यत्र भी सेवाएं देने हेतु निरंतर प्रयासरत रहती है।

वर्ष 2005-06 में राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुलेठी को अंगीकृत करने के उपरान्त संस्था आज सात प्राइमरी, दो जूनियर हाईस्कूल, दो राजकीय इंटर कॉलेज (दुबचौड़ा व चम्पावत) सहित कुल 11 विद्यालयों में नियमित रूप से सहयोग प्रदान कर रही है। संस्था के प्रयासों से इन विद्यालयों में शिक्षण सक्रियता बढ़ी है, विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में गुणात्मक प्रगति, पठन-पाठन में रुचि, स्वास्थ्य रक्षा के प्रति चेतना में वृद्धि हुई है। साथ ही स्थानीय जनता व अभिभावकों में भी जागरूकता बढ़ी है।

एक कक्षा में एक शिक्षक की अवधारणा को बल देते हुए हिमवत्स ने समय-समय पर अंगीकृत विद्यालयों में स्थानीय स्वयंसेवी शिक्षक 'स्वयं पढ़ो और पढ़ाओ' के सिद्धांत पर मानदेय सहित तैनात किये। इन विद्यालयों को डिजिटल टेबलेट, वीडियो, इंटरनेट आदि की व्यवस्था के साथ-साथ खेलकूद सामग्री भी उपलब्ध कराई गई। केन्द्रीय स्तर पर कार्यक्रमों के संचालन के लिए प्राथमिक विद्यालय कुलेठी परिसर में सामुदायिक डिजिटल शिक्षा और विज्ञान संसाधन केंद्र का भवन निर्मित किया गया। केन्द्र में प्रख्यात भौतिकविद पद्मश्री प्रो. एच.सी. वर्मा के सहयोग

हिमवत्स समिति

से बनी विज्ञान प्रयोगशाला के अलावा चक्रीय पुस्तकालय, कम्प्यूटर केंद्र, सिलाई प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी की गई। क्षेत्र के लोगों व विद्यार्थियों को हर प्रकार की वैज्ञानिक गतिविधियों से अवगत कराने के लिए हिमवत्स की ओर से प्रति वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, पृथ्वी दिवस एवं पर्यावरण दिवस आदि का आयोजन भी किया जाता है।

विगत वर्ष से संस्था ने विज्ञान शिक्षा को बोधगम्य एवं लोकप्रिय बनाने हेतु विशेष अभियान छेड़ा है। प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के अकादमिक सहयोग से हिमवत्स द्वारा आयोजित की जाने वाली अनुभव आधारित बाल विज्ञान कार्यशालाएं बच्चों व शिक्षकों के बीच अभूतपूर्व लोकप्रियता हासिल कर रही हैं। परिणामस्वरूप जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) की ओर से संस्था को नियमित रूप से आमंत्रित किया जा रहा है, ताकि जिले के विज्ञान शिक्षकों को अनुभव आधारित विज्ञान शिक्षण की नवाचारी पद्धति में प्रशिक्षित किया जा सके।

संस्था की हाल की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है राजकीय जूनियर हाइस्कूल कुलेठी में अटल टिंकरिंग लैब की स्थापना को मंजूरी दिलवाना। आम तौर पर अटल टिंकरिंग लैब इंटरमीडिएट स्तर के विद्यालयों में ही स्थापित की जाती है लेकिन संस्था के संरक्षक प्रो. एच.डी. बिष्ट के अथक प्रयासों से यह जूनियर हाइस्कूल में स्थापित की जा सकी है और अब छात्र-छात्राएं इससे लाभान्वित हो रहे हैं।

संस्था द्वारा विद्यार्थियों व युवक-युवतियों को विभिन्न शैक्षिक व शिक्षणेत्तर गतिविधियों में सहयोग दिया जा रहा है। इनमें प्रमुख हैः 21वीं सदी के लिए अनिवार्य ई-साक्षरता, योग एवं स्वास्थ्य, पर्यावरण के प्रति जागरूकता, बच्चों को जवाहर/राजीव नवोदय विद्यालय प्रवेश, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एवं एकीकृत छात्रवृत्ति परीक्षा तथा बाल विज्ञान कांग्रेस आदि के लिए प्रशिक्षण, टेबलेट के माध्यम से शिक्षा। संस्था के स्वयंसेवकों द्वारा कक्षावार, विषयवार व पाठ्यक्रमानुसार नवीन तकनीक यथा- इंटरनेट, प्रोजेक्टर आदि के माध्यम से शिक्षण कार्य किया जाता है। ज्ञानवर्धक डिजिटल कंटेंट, प्रोजेक्टर आदि से शिक्षण कार्य की गुणवत्ता को बेहतर करने के प्रयास किए जा रहे हैं। पुस्तकालय में ज्ञानोपयोगी तथा प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बंधित पुस्तकें उपलब्ध करायी गयी है।

संस्था के नवीनतम कार्यक्रमों में विज्ञान स्नातक कर रही स्थानीय छात्राओं उन्नयन के लिए चलाया जा रहा गर्ल्स इंटर्नशिप प्रोग्राम उल्लेखनीय है। साथ ही अन्य संस्थाओं के साथ साझेदारी हेतु एलायंस फॉर साइंस प्रोग्राम, दूरस्थ विज्ञान गतिविधियों के लिए साइंस आउटरीच प्रोग्राम आदि कार्यक्रम शुरू किए गए हैं।

साविद्या उपसमिति

हिमवत्स समिति का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को शिक्षा या अन्य कौशल आधारित क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद देना है। साविद्या उपसमिति का प्रयास है कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शिक्षा में मदद ताकि उन्हें भविष्य में सरकार द्वारा संचालित जवाहर/नवोदय विद्यालयों में प्रवेश मिल सके। इस उद्देश्य के लिए संस्था लगातार प्रयास कर रही है। बच्चों में प्रतियोगिताओं के प्रति जागरूकता, खेलकूद में रुचि तथा सामाजिक कार्यों में सहभागिता की समझ पैदा करना भी साविद्या का उद्देश्य है।

संस्था के कार्यकारिणी सदस्य

नाम	पद	पता	फोन न0
प्रो. के.के. पाण्डे	अध्यक्ष	5-609, मल्ला गोरखपुर, हल्द्वानी	9411107268
श्री आशुतोष उपाध्याय	उपाध्यक्ष	आश्रय, राजलक्ष्मी विहार, देवलचौड़ खाम, हल्द्वानी	8076072918
डा. जी.बी. बिष्ट	सचिव	शुभम करोति, दुर्गा कालोनी, हल्द्वानी	9412963619
श्री के.एस. मेहरा	कोषाध्यक्ष	5-265 मल्ला गोरखपुर, तिकोनिया, हल्द्वानी	7830599937
प्रो. प्रेम बी. बिष्ट	सदस्य	आई.आई.टी. मद्रास	9444771994
श्री राजेन्द्र गहतोड़ी	सदस्य	पिथौरागढ़ रोड, चम्पावत	9411546795
श्री बी.सी. जोशी	सदस्य	ग्राम-पैती, पो. फुँगर, चम्पावत	9411116112

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 13

साविद्या के आर्थिक स्रोत

1. डॉ. एच.डी. बिष्ट के परिवारजनों द्वारा प्रदत्त धनराशि।
2. श्री आर.सी. पन्त द्वारा उपलब्ध कराई गई धनराशि से अर्जित ब्याज से बच्चों को गिरिबाला पन्त छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।
3. संस्था के सम्मानित सदस्यों व दानदाताओं (ए.एफ.ई. स्टैनफर्ड और सिलिकन वैली से) द्वारा प्रदत्त सहायता।
4. एस.एस.एफ. फ्रीमॉन्ट द्वारा प्रदत्त सहायता।
5. इंडियन फॉर कलेक्टिव एक्शन से प्राप्त धनराशि।

वर्ष 2021-2022 के दानदाता

1. श्री दिनेश चन्द्र पाण्डेय लखनऊः प्रो. एच.डी. बिष्ट की प्रेरणा पाकर अगस्त 2021 से रु. 1,000 प्रतिमाह तथा जनवरी 2022 से रु. 1,500 प्रतिमाह का नियमित दान।
2. रजत पाण्डेय पुत्र श्री के.के. पाण्डेय रु. 30,000
3. प्रो. एच.डी. बिष्ट रु. 1,10,000
4. डॉ. जी.बी. बिष्ट रु. 1,00,000
5. डॉ. आर.के. जोशी सेवानिवृत्त चिकित्सा अधीक्षक, जिला चिकित्सालय, चम्पावत द्वारा हिमवत्स संचालित सी.डी.एल.ए.एस.आर.सी. भवन में रंगरोगन हेतु रु. 20,000
6. श्रीमती निर्मला बिष्ट पत्नी डॉ. जी.बी. बिष्ट रु. 50,000
7. प्रो. इन्दु पाठक, समाज शास्त्र विभाग द्वारा गर्ल्स इन्टर्नशिप प्रोग्राम हेतु रु. 50,000
8. श्री हेम जोशी/रजनी जोशी रु. 5,000
9. श्री दिनेश चन्द्र बिष्ट डड़ा बिष्ट रु. 1,500
10. संगीता बिष्ट शंकर रु. 7,86,547.50
11. दिव्या पाण्डे रु. 40,000
12. श्री कैलाश चन्द्र पाण्डेय रु. 2,000
13. श्री सी.एम. जोशी रु. 10,000

हिमवत्स समिति

समिति के नियमित दानदाता

श्री सतीश चन्द्र पाण्डेय, गीतांजली सेवा संस्थान लोहाघाट, सुशील बिष्ट, डॉ. मीनाक्षी जोशी देहरादून, डॉ. अवनी भूषण मवार मथुरा, डॉ. एस.एस. भारद्वाज, डॉ. पी.सी. गुरुरानी, डॉ. मीना भट्ट, डॉ. बीनू जैन पीरूमदारा रामनगर, डॉ. योगेन्द्र प्रताप दंत चिकित्सक किच्छा उधमसिंह नगर, उदित तिवारी टिहरी, श्री सी.एम. जोशी हल्द्वानी, श्री गौरव जोशी हल्द्वानी, श्री मनोहर तिवाड़ी चम्पावत, पंकज जोशी हल्द्वानी।

अन्य दानदाता

1. साविद्या स्मारिका में विज्ञापनः आम्रपाली ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस हल्द्वानी, उदयन इंटरनेशनल स्कूल चम्पावत, श्री राजेन्द्र गहतोड़ी, श्री प्रकाश तिवारी, श्री हरीश चन्द्र खर्कवाल-चम्पावत।
2. वेदान्ता नैत्रालय हल्द्वानी की समिति वसुन्धरा द्वारा एक कम्प्यूटर सेट मय यूपीएस सहित चम्पावत कार्यालय हेतु दान दिया गया।
3. विजय चौधरी (मनीष आटोमोबाइल चम्पावत द्वारा सी.डी.एल.ए.एस.आर.सी. हेतु एक प्रिंटर दानस्वरूप प्रदान किया गया।
4. डॉ. हरीश चन्द्र सती पैथोलॉजी परामर्शदाता हल्द्वानी द्वारा 17 ज्यामितीय किट दान स्वरूप दी गयी।

पूर्व दानदाता जिनके सहयोग से अभी भी कार्यक्रम चल रहे हैं

ए.एफ.ई.-स्टैण्डफर्ड और सिलिकॉन वैली से, एस.एस.एफ.-फ्रीमेन्ट से, आई.सी.ए.-इण्डियन फॉर कलैक्टिव एक्शन द्वारा संगीता बिष्ट शंकर।

श्री त्रिभुवन कुमार बिष्ट (यूएसए) का हिमवत्स-साविद्या में योगदान

1. ग्राम डड़ा बिष्ट के गरीब व असहाय परिवारों के बच्चों की शैक्षिक परेशानियों को गांव की ही शिक्षित महिला श्रीमती जानकी बिष्ट के माध्यम से दूर करने में मदद।
2. प्रो. एच.सी. वर्मा द्वारा विकसित 125 प्रयोगों को बनाने के लिए 25,000 रुपए की धनराशि प्रदान।
3. सीडीएलएएसआरसी कुलेठी की सुरक्षा हेतु मजबूत ग्रिल युक्त दरवाजे का निर्माण।
4. हिमवत्स साविद्या द्वारा आयोजित नेत्र शिवरों में सक्रिय भागीदारी तथा दूर से आये हुए मरीजों के रात विश्राम एवं भोजन की व्यवस्था।
5. समय-समय पर भारत आगमन पर हिमवत्स द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों, यथा- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, स्वास्थ कैम्पों आदि में सक्रिय व आर्थिक योगदान।
6. वर्ष 2021-22 में हिमवत्स द्वारा चलाये जा रहे गरीब, असहाय परिवारों के मेधावी बच्चों तथा गांव के गरीब परिवारों के उत्थान हेतु 2,77,113 (दो लाख सतहत्तर हजार एक सौ तेरह) रु. का योगदान व निरन्तर मदद का आश्वासन श्री टी.के. बिष्ट की हिमवत्स साविद्या के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दशार्ता है। ■

श्रद्धांजलि

स्व. हंस राज सूद
एफ.सी.ए.

हिमवत्स के शुभचिंतक एवं मददगार श्री हंस राज सूद का विगत 4 नवम्बर 2022 को अमेरिका के इरविन, कैलिफोर्निया स्थित उनके आवास में देहान्त हो गया। वे अपने पीछे पत्नी श्रीमती स्वरूप सूद, पुत्र राघव एवं पुत्रियों दीपा एवं मेघा सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। हिमवत्स परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 15

कुलेठी विद्यालय परिसर में अटल टिंकरिंग लैब

हिमवत्स के सतत प्रयासों से केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना 'अटल टिंकरिंग लैब' की कुलेठी उच्च प्राथमिक विद्यालय परिसर में की जा चुकी है। यह संभवत: पहला उदाहरण है जब अटल टिंकरिंग लैब को किसी जूनियर हाईस्कूल परिसर में स्थापित किया गया है। आम तौर पर इसकी स्थापना इंटरमीडिएट कॉलेजों में की जाती है।

कुलेठी में अटल टिंगरिंग लैब को लाने का श्रेय हिमवत्स के पूर्व सचिव प्रो. एच.डी. बिष्ट का जाता है, जिन्होंने सम्बंधित प्रशासनिक अधिकारियों को वांछित विद्यालय में इसकी स्थापना के महत्व को समझाने में कामयाबी हासिल की।

लैब से लाभान्वित होने के लिए आवश्यक मानक हैं: (अ) 250 छात्र (कक्षा 6 से 12 तक) तथा (ब) 1000 वर्ग फुट स्थान। विद्यार्थियों की संख्या के मानक को पूरा करने के लिए हिमवत्स समर्थित 04 विद्यालयों- राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय कुलेठी, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खर्ककार्की, राजकीय बालिका इण्टर कालेज चम्पावत और राजकीय इण्टर कालेज दुबचौड़ा को शामिल किया गया। लैब के लिए पूर्व माध्यमिक विद्यालय कुलेठी को नोडल विद्यालय के रूप में चिन्हित किया गया। स्थान के लिए हिमवत्स सी.डी.एल.ए.एस.आर.सी. कुलेठी को प्रस्तावित किया गया।

अटल टिंकरिंग लैब की स्थापना हेतु विभिन्न राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों के 13005 सरकारी, व गैर-सरकारी विद्यालयों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं से केंद्र सरकार के अटल इनोवेशन मिशन के अन्तर्गत जून 2016 में आवेदन मांगे गये। इनमें उत्तराखण्ड के 411 आवेदन शामिल थे। चयनित आवेदकों को 3 चरणों की प्रतियोगिता उत्तीर्ण करने के उपरान्त चौथे चरण के लिये नवम्बर 2016 में दिल्ली बुलाया गया। उत्तराखंड से 12 प्रतिभागी चयनित किये गये। उल्लेखनीय है कि उत्तराखड़ के चार जिलों- अल्मोड़ा, बागेश्वर, पिथौरागढ़ एवं चम्पावत से एकमात्र हिमवत्स चयनित मिडिल स्कूल कुलेठी को स्वीकृति मिली।

नीति आयोग, नई दिल्ली द्वारा लिए गए साक्षात्कार के उपरांत 'एल.ए.एस.आर.सी. मिडिल स्कूल कॉम्पलैक्स कुलेठी मैनेज्ड बाय हिमवत्स' नाम से अटल टिंकरिंग लैब स्वीकृत हुई। इससे पूर्व नीति आयोग ने उक्त नाम पर आपत्ति प्रकट की थी कि अटल टिंकरिंक लैब की स्थापना के लिए किसी स्वयंसेवी संस्था को अधिकृत नहीं किया जा सकता। संस्था द्वारा संचालित किसी विद्यालय में लैब की स्थापना की जा सकती है।

इस पर प्रो. बिष्ट के पुनः अनुरोध किया कि हिमवत्स संस्था का कोई अपना विद्यालय नहीं है। संस्था केवल सरकारी विद्यालयों को सहयोग देती है। इसलिए मिडिल स्कूल कुलेठी को नोडल स्कूल मानते हुए विद्यालय के नाम से पुनः अटल टिंगरिंग लैब स्थापित की जानी चाहिए।

प्रो. बिष्ट तथा हिमवत्स के वर्तमान अध्यक्ष प्रो. के.के. पाण्डेय के बार-बार अनुरोध करने पर 2019 में पुनः विद्यालय द्वारा ऑन-लाइन आवेदन किया गया। 29 अगस्त 2020 को कुलेठी विद्यालय के लिए अटल टिंकरिंग लैब को मंजूरी दे दी गयी।

उम्मीद की जानी चाहिए कि अटल टिंकरिंग लैब की स्थापना से बच्चे रचनात्मकता से जुड़ सकेंगे। क्षेत्र की समस्याओं को वैज्ञानिक ढंग से हल कर सकेंगे तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा। बच्चे अपनी सृजनात्मक योग्यता सिद्ध कर सकेंगे। शिक्षण पाठ्यसहगामी क्रियाओं में छात्र-छात्राओं की प्रतिभागिता में वृद्धि, बच्चों में स्व-रोजगार, कौशल विकास की भावना से व्यवसायिक क्षेत्रों में बढ़ावा मिल सकेगा। ■

उपलब्धि

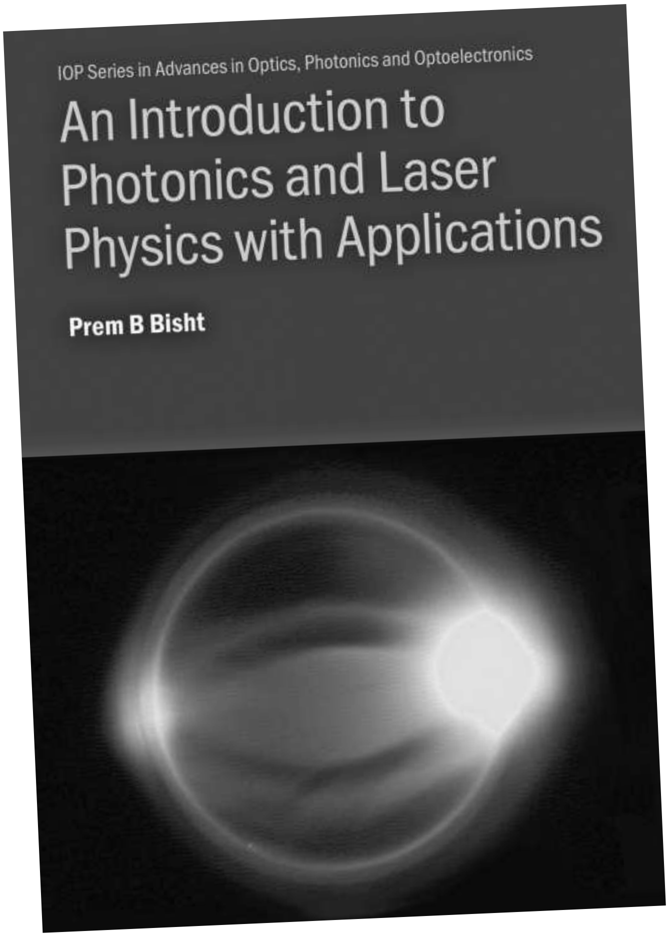

प्रो. प्रेम बिष्ट की पुस्तक का अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन

हिमवत्स के लिए यह बड़े गर्व का विषय है कि संस्था की कार्यकारिणी के सदस्य प्रो. प्रेम बल्लभ बिष्ट द्वारा लिखित उच्चस्तरीय पाठ्यपुस्तक का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशन हुआ है। प्रो. बिष्ट आई.आई.टी. मद्रास के भौतिकविज्ञान विभाग में कार्यरत हैं और देश में अल्ट्राफास्ट लेजर स्पेक्ट्रोस्कोपी के अग्रणी शोधकताओं में गिने जाते हैं। प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव के प्राथमिक विद्यालय तथा राजकीय इंटर कॉलेज चम्पावत से हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट करने वाले प्रो. बिष्ट की जीवन यात्रा भी वर्तमान विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय है। यहां हम उनकी सद्य: प्रकाशित पाठ्यपुस्तक का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

अत्याधुनिक लेजर तकनीक आज सर्वव्यापी साधन का स्थान ले चुका है। गहन अंतरिक्ष शोध से लेकर साधारण प्रयोगशाला उपकरणों तक इसका इस्तेमाल होता है। और तो और नए जमाने की दुकानों में इस्तेमाल होने वाले बारकोड स्कैनरों तक में लेजर उपयोग में लाया जाता है। यद्यपि लेजर, ऑप्टिक्स एवं ऑप्टिकल फिजिक्स जैसे अग्रणी विषय का अहम हिस्सा है और खरबों डॉलर की कमाई वाले उद्योगों में बहुतायत से इस्तेमाल हो रहा है, तथापि भारतीय उपमहाद्वीप में इसका विकास प्रायोगिक प्रशिक्षण के अभाव में बुरी तरह बाधित हुआ है। अतएव लेजर और इससे जुड़ी अवधारणाओं पर बुनियादी व मौलिक जानकारी देने वाली समग्र पाठ्यपुस्तक का प्रकाशन वक्त की जरूरत है।

प्रो. प्रेम बी. बिष्ट लिखित और आईओपी साइंस द्वारा हालिया प्रकाशित पुस्तक- *'एन इंट्रोडक्शन टू फोटोनिक्स एंड लेजर फिजिक्स विद एप्लीकेशंस'* इस बेहद महत्वपूर्ण विषय के स्नातक व परास्नातक विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। इसका मकसद प्रकाश भौतिकी एवं जैव-अभियांत्रिकी के क्षेत्र में शोधार्थियों को अल्ट्राफास्ट लेजर और फोटोनिक्स पर आधारभूत संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराना है।

इस पुस्तक की कई खास बातें हैं। पहली व सर्वोपरि, इसके लेखक प्रो. प्रेम बल्लभ बिष्ट अपने विषय के देश के शीर्ष प्रयोगधर्मी वैज्ञानिक हैं और विगत 35 वर्षों से लेजर स्पेक्ट्रोस्कोपी एवं नॉन लीनियर ऑप्टिक्स में शोध कर रहे हैं। प्रो. बिष्ट के अपने अनुभव की गहनता इस पुस्तक में पर्याप्त रूप से परिलक्षित होती है। पुस्तक में उनकी खुद की प्रयोगशाला में किए गए प्रयोगों व परिणामों का विस्तृत उल्लेख इस बात की पुष्टि करता है। पुस्तक में जटिल गणितीय विवरणों से यथासंभव बचने का प्रयास किया गया है और ज्यादा जोर इस बात पर दिया गया है कि अवधारणाओं की भौतिक समझ व प्रयोग सम्बंधी विवरणों पर ध्यान दिया जाय। दूसरी, इस पुस्तक की सामग्री लेखक के आई.आई.टी. मद्रास

में किए गए दो दशक से ज्यादा लम्बे शिक्षण तथा शोधकार्यों के अनुभव का निचोड़ है। इस प्रकार, पुस्तक की विषयवस्तु जहां अग्रणी स्तर की है, वहीं इसे उच्च स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रस्तुत किया गया है। तीसरी, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, पुस्तक में व्यावहारिक और प्रयोगात्मक विवरणों पर खास जोर दिया गया है। पूर्व में उल्लिखित उपयोगों के अलावा, लेजर के कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण उपयोग हैं कैविटी रिंग-डाउन स्पेक्ट्रोस्कोपी और ऑप्टिकल पैरामीट्रिक प्रोसेस सम्बंधी उपयोग। कुछ उपयोग अंतरविषयक क्षेत्रों के अंतर्गत आते हैं, जैसे- बायोटेक्नोलॉजी के लिए नॉनलीनियर ऑप्टिक्स के साथ इमेजिंग तथा इंजीनियरिंग क्षेत्र में फाइबर व सेमीकंडक्टर लेजर का उपयोग। विभन्न स्पेक्ट्रोस्कोपिक विधियों के उपयोग रसायन विज्ञान व पदार्थ विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए भी बेहद अहम हैं।

इस पुस्तक की कई खास बातें हैं। पहली व सर्वोपरि, इसके लेखक प्रो. प्रेम बल्लभ बिष्ट अपने विषय के देश के शीर्ष प्रयोगधर्मी वैज्ञानिक हैं और विगत 35 वर्षों से लेजर स्पेक्ट्रोस्कोपी एवं नॉन लीनियर ऑप्टिक्स में शोध कर रहे हैं। प्रो. बिष्ट के अपने अनुभव की गहनता इस पुस्तक में पर्याप्त रूप से परिलक्षित होती है।

अंत में, इस पुस्तक का प्रस्तुतीकरण विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पुस्तक को छोटे-छोटे खंडों में बांटा गया है और विषयवस्तु को समझाने के लिए यथासंभव चित्रों की सहायता ली गयी है। परिणामस्वरूप पाठक को अपने अपेक्षित टॉपिक पर फोकस करने में मदद मिलती है, एक संदर्भ पुस्तक के रूप में इसकी उपयोगिता तो निर्विवाद है ही।

यह पुस्तक प्रो. बिष्ट के पांच वर्षों के कठिन श्रम का परिणाम है। इस दौरान, 2018 में, खास तौर पर पुस्तक के लिए चम्पावत में बिताए चार महीने बहुत महत्वपूर्ण रहे, जब पुस्तक के प्रमुख अंशों का लेखन किया गया। 444 पृष्ठ की यह पुस्तक 24 अध्यायों में बंटी है। इसके अलावा इसमें 95 प्रश्नों के समाधान, 250 उनुत्तरित प्रश्न, 250 से ज्यादा चित्र, 30 तालिकाएं और 195 संदर्भ दिए गए हैं। पुस्तक सम्पूर्ण विश्व के लोगों को समप्रित है। ■

विश्व पर्यावरण दिवस पर निवेदन

- अपने कार्य, आचरण और विचारों द्वारा सुनिश्चित करें कि आने वाली पीढ़ी को कम से कम इतनी सुविधाएं तो उपलब्ध हों जितनी हमें उपलब्ध हैं।
- कृपया बिजली, पानी, ईंधन व संसाधनों का उपभोग आवश्यकतानुसार ही करें। अनावश्यक बर्वादी न होने दें तथा इस बारें में अपने परिवार को जागरूक बनाएं।
- अपने आवासीय परिसर को स्वच्छ, सुन्दर और हराभरा रखें। कूड़े का निस्तारण नगर निगम द्वारा उपलब्ध सेवाओं व निदेर्शों के अनुसार करें।
- महापौर व समस्त पार्षद नगर निगम के नालों-नहरों को अभी से भली भॉंति साफ करा दें ताकि वर्षा काल में जल भराव की समस्या न हो।
- वन विभाग तथा उद्यान विभाग अपनी पौधशालाओं में उपलब्ध पौध का सार्वजनिक वितरण करें। जिला, ब्लाक, तहसील स्तर पर सूचना सरकारी कार्यालयों व विभागीय पौधशालाओं में उपलब्ध रखें।
- प्रेस व मिडिया द्वारा जानकारी दी जाए कि कहां कौन से वृक्ष लगाये जायें, कहां न लगायें जायें (भवन के ठीक पास, बिजली टेलीफोन लाइन के नीचे अथवा कांटेदार वृक्ष मार्ग में)। वृक्षों से फल, ईधन, इमारती लकड़ी आदि कितने समय बाद कितनी मात्रा में सम्भावित है, यह बताना उपयुक्त होगा। पूजा स्थलों, श्मशान/कब्रगाह, पार्को, स्कूल-कालेजों, नदी नालों मे कब क्या लगायें यह बताना भी समीचीन होगा।
- पर्यावरण दिवस से पर्यावरणीय हित के कार्यक्रम सुनियोजित रूप से प्रारम्भ किये जायें।

आई.डी. पाण्डेय
सेवानिवृत्त मुख्य वन संरक्षकए वन विभाग उत्तराखण्ड

छात्रवृत्ति एवं दानदाता

हिमवत्स साविद्या/गिरीबाला पन्त छात्रवृत्ति कोष एवं दानदाताओं की सूची

हिमवत्स संस्था वर्ष 2004 से विभिन्न दानदाताओं द्वारा दी गई धनराशि से प्राप्त ब्याज से निरंतर छात्रवृत्तियां दे रही है। इन छात्रवृत्तियों का विवरण निम्नवत है:

(अ) स्थाई छात्रवृत्तियां :

1. गिरिबाला पन्त छात्रवृत्तिः यह छात्रवृत्ति श्री आर.सी. पंत द्वारा अपनी पत्नी की स्मृति में प्रदान की जाती है।

2. साविद्या छात्रवृत्तियांः ये छात्रवृत्तियां वर्ष 2004 से बिष्ट परिवार द्वारा अपने माता-पिता की स्मृति में प्रदान की जाती हैं। इसके अंतर्गत अनेक छोटी छोटी छात्रवृत्तियां हैं, जिनका विवरण इस प्रकार हैः
   (क) पूर्णानन्द जोशी छात्रवृत्ति (प्रो. एच.डी. बिष्ट द्वारा)
   (ख) नारायण दत्त जोशी छात्रवृत्ति (प्रो. एच.डी. बिष्ट द्वारा)
   (ग) मुरलीधर शास्त्री छात्रवृत्ति (पुत्री माया त्रिपाठी द्वारा)
   (घ) एम.के. जोशी/प्रेमा जोशी छात्रवृत्ति (पुत्री मीनाक्षी जोशी और अपर्णा पंत द्वारा)
   (च) दुर्गा त्रिपाठी छात्रवृत्ति (पुत्री कमला त्रिपाठी द्वारा)
   (छ) हरिशचन्द्र पंत छात्रवृत्ति (पौत्र पार्थ पंत द्वारा)
   (ज) कान्ति जैन छात्रवृत्ति (पुत्री बीनू जैन द्वारा)
   (झ) कमला जोशी छात्रवृत्ति (पुत्री माया त्रिपाठी द्वारा)
   (ट) जतिन कुमार त्रिपाठी छात्रवृत्ति (पत्नी माया त्रिपाठी द्वारा)
   (ठ) पद्मा त्रिपाठी छात्रवृत्ति (भाभी माया त्रिपाठी द्वारा)
   (ड) सुमेघा कुमारी छात्रवृत्ति (बहन डा0 मधु बाला द्वारा)

3. पद्मावती यामिनी अवस्थी छात्रवृत्ति (पुत्री निर्मला बिष्ट द्वारा)

(ब) अस्थाई छात्रवृत्तियां :

(क) बसन्ती पंत हरिप्रिया पाण्डेय छात्रवृत्ति छात्रवृत्ति (पौत्र डॉ. के.के. पाण्डेय द्वारा 5 वर्ष)
(ख) निर्मला खर्कवाल छात्रवृत्ति (श्री बी.डी. खर्कवाल द्वारा 5 वर्ष)
(ग) गिरिधर दत्त मथेला छात्रवृत्ति (पुत्र प्रो. सी.एस.मथेला द्वारा 1 वर्ष)
(घ) डॉ. जगदीश मोहन पंत छात्रवृत्ति (पत्नी चंद्रा पंत द्वारा 1 वर्ष)
(च) सुचेता बडौनी छात्रवृत्ति (1 वर्ष)
(छ) वर्मा छात्रवृत्ति (1 वर्ष)
(ज) गोविन्दी कर्नाटक छात्रवृत्ति (पुत्री श्रीमती बीना मथेला द्वारा)
(झ) भगवती प्रसाद साह छात्रवृत्ति (पुत्री कमलेश साह द्वारा 1 वर्ष)
(ट) बसन्ती पंत छात्रवृत्ति (पौत्र डॉ. के.के. पाण्डेय द्वारा)

छात्रवृत्ति

वर्ष 2021-22 में छात्रवृत्ति से आच्छादित विद्यालयों की सूची

1. रा.बा.इ.का. हल्द्वानी
2. रा.बा.इ.का. बनभूलपुरा हल्द्वानी
3. रा.क.उ.प्रा.वि. राजपुरा
4. रा.क.उ.प्रा.वि. राजपुरा कनकपुर कोटाबाग
5. रा.इ.का. मोतीनगर
6. रा.इ.का. बानना
7. रा.क.उ.मा.वि. बमौरी
8. रा.क.इ.का. खुपार्ताल
9. अ.उ.रा.बा.इ.का. नैनीताल
10. रा.बा.इ.का. भवाली
11. रा.इ.का. नारायणनगर कुसुमखेडा
12. रा.बा.इ.का. कालाढूंगी
13. रा.इ.का. दुबचौड़ा
14. रा.बा.इ.का. चम्पावत
15. रा.ह.रा.इ.का. टनकपुर
16. कू.ऐं.संस्कृत विद्यालय चम्पावत
17. ज.पू.मा.वि. मुड़ियानी
18. रा.उ.प्रा.वि. खर्ककार्की
19. रा.उ.मा.वि. नरसिंहडाड़ा
20. रा.इ.का. चम्पावत
21. रा.उ.मा.वि. पल्सों
22. रा.इ.का. चैड़ाकोट
23. रा.इ.का. गूठ गरसाड़ी
24. रा.बा.इ.का. लोहाघाट
25. रा.इ.का. पुलहिन्डोला
26. रा.इ.का. पीपलकोट पिथौरागढ़
27. रा.इ.का. चैबाटी
28. अ.उ.बापू रा.इ.का. नारायणनगर
29. रा.आ.इ.का. आठगांव शिलिंग
30. बी.एल.एस.रा.बा.इ.का. एचोली
31. रा.इ.का. गर्खा
32. रा.इ.का. दौबांस पिथौरागढ़

छात्रवृत्ति

छात्रवृत्ति पाने वाले विद्यार्थियों की सूची

तालिका में क्रम पहली संख्या विद्यालय तथा दूसरी संख्या लाभार्थी छात्र की संख्या को प्रदर्शित करती है।

क्र.सं.	छात्र/छात्रा	कक्षा	क्र.स.	छात्र/छात्रा	कक्षा	क्र.सं.	छात्र/छात्रा	कक्षा
1.1	अंशिका सिंह	9	6.14	हिमानी बेलवाल	11	10.27	पुष्पा बिष्ट	11
1.2	सिया सिजवाली	10	6.15	मुकेश चंद्र	12	11.28	गुजंन तिवारी	12
1.3	रेनू पाल सिंह	10	7.16	गंगा मौर्य	9	11.29	मनीषा सुयाल	12
1.4	माण्डवी गोविल	11	7.17	प्रिया मौर्य	9	11.30	ज्योति भट्ट	12
1.5	किरन मौर्य	12	7.18	मेघा लटवाल	10	11.31	ऑचल तिवाडी	12
1.6	कल्पना बिष्ट	12	7.19	खुशी जोशी	10	11.32	पिंकी मटियाली	12
1.7	हर्षिता नेगी	12	8.20	प्रियंका कड़ाकोटी	9	12.33	मेघा मेहरा	9
2.8	सबा सलमानी	12	8.21	अंजली मेहरा	10	12.34	श्रेया बिष्ट	11
2.9	उरूज फातीमा	12	8.22	सोनिया रावत	10	14.35	ट्विकल पटवा	9
3.10	छाया यादव	9	8.23	नेहा महरा	11	14.36	पूर्वा भट्ट	9
4.11	अरुण सिंह	9	8.24	दीपाली कनवाल	12	14.37	आरती जोशी	11
4.12	स्नेहा शर्मा	9	8.25	ममता कनवाल	12	14.38	दीपा जोशी	11
5.13	सुरज गंगवार	11	9.26	बानी आर्या	9			

साविद्या

क्र.स.	छात्र/छात्रा	कक्षा	क्र.स.	छात्र/छात्रा	कक्षा	क्र.सं.	छात्र/छात्रा	कक्षा
13.39	सलौनी बिष्ट	11	19.52	करन कुमार	10	26.65	पवन जोशी	9
13.40	यमुना बिष्ट	12	19.53	कामेश कुमार	10	27.66	गौरव सिंह देऊपा	11
13.41	मोहित सिंह	9	20.54	त्रिपुरारी सिंह	9	27.67	गौरव जोशी	11
13.42	सचिन सिंह	9	20.55	नीरज कुमार	9	28.68	बबीता अन्ना	10
14.43	अनुश्री जोशी	10	20.56	सागर लोहनी	12	29.69	मयंक जोशी	11
14.44	दीपा नरियाल	10	22.57	हिमांशु अधिकारी	9	29.70	तनुजा बिष्ट	11
14.45	लक्ष्मी रावत	12	22.58	पिंकी बोहरा	12	29.71	कमल सिंह मोसाल	11
15.46	कमल सिंह	11	22.59	निकिता	11	29.72	तरुण जोशी	12
15.47	विशाल निषाद	12	23.60	आस्था जुगरिया	11	29.73	दीपक भट्ट	12
17.48	नीतू सेठी	9	24.61	निशा सामन्त	10	30.74	पलक शाही	11
17.49	हरीश बोरा	10	25.62	दीव्या जोशी	9	30.75	प्रीति जोशी	11
18.50	संजय कापड़ी	7	25.63	गौरव जोशी	9	32.76	गीता पाण्डे	11
18.51	काजल रावत	8	25.64	पूजा चंद	11			

छात्रवृत्ति

अन्य छात्रवृत्तियां

क्र.सं.	छात्र/छात्रा	कक्षा	छात्रवृत्ति
1.77	बबीता काण्डपाल	9	सुमेघा कुमारी छात्रवृत्ति
1.78	दिया पंत	11	
9.79	खुशबू पवार	12	हरिश्चन्द्र पंत छात्रवृत्ति
13.80	नेहा बिष्ट	11	गोविन्दी कर्नाटक छात्रवृत्ति
14.81	तनुश्री जोशी	12	प्रेमा जोशी छात्रवृत्ति
15.82	सागर सिंह बिष्ट	9	कमला जोशी छात्रवृत्ति
15.83	अंशु जोशी	12	पूणार्नंद जोशी छात्रवृत्ति
16.84	अरविन्द जोशी	10	मुरलीधर शास्त्री छात्रवृत्ति
17.85	गीतिका महा	9	पदमा त्रिपाठी छात्रवृत्ति
17.86	शगुन आर्या	10	
19.87	निखिलेश कुमार	9	नारायण दत्त जोशी छात्रवृत्ति
19.88	संजना	9	दुर्गा त्रिपाठी छात्रवृत्ति
20.89	अभिषेक बोहरा	11	एम.के. जोशी छात्रवृत्ति
20.90	कोमल सिंह	11	जतिन कुमार त्रिपाठी छात्रवृत्ति
21.91	मनीष जोशी	9	कान्ति जैन छात्रवृत्ति
21.92	नेहा जोशी	9	
31.93	गुजंन आर्या	9	पदमावती यामनी अवस्थी छात्रवृत्ति
31.94	कुमारी दीक्षा	11	
31.95	शिवानी ऐरी	11	

साइंस आउटरीच प्रोग्राम

1. पहली विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

विगत वर्ष हिमवत्स ने शिक्षा क्षेत्र में देश की प्रतिष्ठित स्वयंसेवी संस्था- प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के विज्ञान कार्यक्रम के अकादमिक सहयोग से विज्ञान लोकव्यापीकरण का एक अत्यंत लोकप्रिय कार्यक्रम शुरू किया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूली बच्चों के लिए अनुभव आधारित बाल विज्ञान कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इन कार्यशालाओं में बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तक में दी गई विज्ञान सम्बंधी अवधारणाओं को, अपने हाथों से बने मॉडलों की मदद से, खोजकर सीखते हैं। हिमवत्स के स्वयंसेवकों द्वारा सम्पन्न की जाने वाली ये कार्यशालाएं बच्चों व शिक्षकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। इनकी लोकप्रियता का अंदाज इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जनपद के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) लोहाघाट ने जिले के विज्ञान शिक्षकों को बाल विज्ञान कार्यशालाओं में प्रशिक्षित करने हेतु हिमवत्स को आमंत्रित किया।

डायट लोहाघाट के आमंत्रण पर संस्था ने अपने साइंस आउटरीच प्रोग्राम के अंतर्गत 15 से 17 दिसम्बर 2021 को तीन दिवसीय अनुभव आधारित बाल विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में जिले के राजकीय विद्यालयों के 22 शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। हिमवत्स की ओर से संस्था के उपाध्यक्ष श्री आशुतोष उपाध्याय ने नेतृत्व में श्री गौरव बोहरा एवं श्री पंकज बोहरा द्वारा कार्यशाला का संचालन किया। कार्यशाला का उद्देश्य उन विधियों से शिक्षकों को परिचित व प्रशिक्षित करना था, जो विज्ञान शिक्षा को रुचिकर और गहन बनाती हैं। इस तीन दिवसीय कार्यशाला के प्रथम दिन 'मानव शरीर' विषय पर मॉडल तैयार किए गए। सभी शिक्षकों ने अपने-अपने समूह में अत्यंत तल्लीनता से गत्ते के मॉडल बनाए व उनका प्रस्तुतीकरण किया।

कार्यशाला के दूसरे दिन खगोल विषय के अंतर्गत सूर्य, पृथ्वी

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 23

व चंद्रमा की व्यवस्था पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रतिभागी शिक्षकों ने मॉडल व रोल-प्ले के माध्यम से पृथ्वी और चन्द्रमा की गतियों, दिन-रात का होना, पूर्णिमा, अमावस व ग्रहण जैसी अवधारणाओं की समझ हासिल की। आज भी कार्यशाला में शिक्षको ने अत्यंत रुचिपूर्वक व तन्मयता से प्रतिभाग किया।

कार्यशाला के तीसरे व अंतिम दिन 'मानव कंकाल' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने गत्ते की सहायता से अत्यंत सुंदर मॉडल तैयार किए और उनका प्रस्तुतीकरण किया। अंत में समारोहपर्वूक कार्यशाला का समापन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इन्हें बार-बार किए जाने की आवश्यकता बताई। डायट के प्रधानाचार्य एवं कार्यशाला समन्यवक डॉ. अनिल मिश्रा ने सफल और जीवंत आयोजन के लिए संदर्भदाताओं व हिमवत्स संस्था के प्रति आभार जताया। ■

---

2. दूसरी विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) लोहाघाट के साथ प्रथम दौर की अनुभव आधारित बाल विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला के प्रभाव के बाद जल्दी ही दूसरी तीन दिवसीय अनुभव आधारित विज्ञान कार्यशाला के आयोजन का आमंत्रण संस्था को प्राप्त हुआ। यह कार्यशाला 26 विज्ञान शिक्षकों के नए बैच के साथ आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में भी विगत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला के विषयों को ही दोहराया गया।

कार्यशाला के पहले दिन खगोलः सूर्य, पृथ्वी एवं चंद्रमा की व्यवस्था को स्वनिर्मित मॉडलों व रोलप्ले के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया। दूसरे व तीसरे दिन क्रमशः मानव शरीर एवं मानव कंकाल विषयों पर सत्र सम्पन्न हुए। कार्यशाला के समापन पर प्रत्येक प्रतिभागी शिक्षक द्वारा कार्यशाला में प्राप्त अनुभवों को अपने-अपने विद्यालयों तक पहुंचाने की वचनबद्धता जाहिर करते हुए कार्यशाला की प्रशंसा की। अंत में डायट प्राचार्य ने कार्यशाला हेतु हिमवत्स संस्था का आभार व्यक्त करते हुए आयोजन का औपचारिक समापन किया। ■

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 24

3. तीसरी विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

पहली व दूसरी विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाओं की सफलता से प्रेरित होकर 23 से 25 मार्च 2022 को ब्लॉक संसाधन केंद्र बाराकोट में तीन दिवसीय एस.ए.डी.पी. प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में ब्लॉक के 30 विज्ञान शिक्षकों ने प्रतिभाग किया।

इस बार भी विगत कार्यशालाओं की तरह नए शिक्षकों के साथ पूर्ववत विषयों पर सत्र रखे गए थे। प्रतिभागियों ने कार्यशाला के प्रथम दिन 'मानव शरीर', दूसरे दिन 'कंकाल तंत्र' और तीसरे व अंतिम दिन 'खगोलः सूर्य, पृथ्वी एवं चंद्रमा की व्यवस्था' पर अनुभव आधारित गतिविधियों के माध्यम से समझ बनाने का प्रयास किया गया।

कार्यशाला के समापन पर डायट से आये प्रवक्ता श्री अरुण तनया ने हिमवत्स संस्था की शिक्षा के क्षेत्र में कल्याणकारी कार्य करने हेतु सराहना की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में समस्त शिक्षकों द्वारा संस्था का आभार व्यक्त किये जाने साथ ही विज्ञान प्रशिक्षण का समापन किया गया। ■

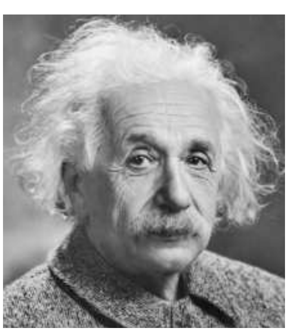

"Wisdom is not a product of schooling but of the lifelong attempt to acquire it."

— Albert Einstein

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 25

झलकियां

पालो एल्टो (यूएसए) में सीनियर सिटीजंस ग्रुप के साथ हिमवत्स के संरक्षक प्रो. एच.डी. बिष्ट

साविद्या स्मारिका-14 का विमोचन समारोह

नेत्रदान जागरूकता कैंप

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह

जिलाधिकारी का साइंस रिसोर्ससेंटर भ्रमण

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 26

झलकियां

हरेला सप्ताह में बीज बॉल तैयार करते बच्चे

गर्ल्स इंटर्नशिप प्रोग्राम में प्रशिक्षण

सिलाई मशीनों का अनुरक्षण

अनुभव आधारित विज्ञान कार्यशाला आमीन तल्लीन बच्चे

ग्रामोत्थान कार्यक्रम में बच्चों की सहायता

डायट लोहाघाट में विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 27

झलकियां

बीआरसी बाराकोट में शिक्षण प्रशिक्षण कार्यशाला

विज्ञान शिक्षकों के साथ खगोल विज्ञान कार्यशाला

विश्व योग दिवस पर कार्यक्रम

विश्व गणित दिवस पर कार्यक्रम

अलायंस फॉर साइंस अभियान के अंतर्गत विज्ञान कार्यशाला

हल्द्वानी थाल सेवा में सहयोग

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 28

झलकियां

छात्रवृत्ति वितरण समारोह-2022, चम्पावत

छात्रवृत्ति वितरण समारोह-2022, चम्पावत में रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते बाल बालक-बालिकाएं

प्रोजेक्टर की मदद के पढ़ाते स्वयंसेवक

एएफएस अभियान के तहत राजीवन नवोदय खटीमा में कार्यशाला

छात्रवृत्ति वितरण समारोह-2022, हल्द्वानी

गर्ल्स इंटर्नशिप प्रोग्राम के तहत कम्युनिटी वर्कशॉप

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 29

गर्ल्स इंटर्नशिप प्रोग्राम

स्नातक छात्राओं के सशक्तीकरण की मुहिम

इस वर्ष हिमवत्स ने विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की अपनी मुहिम को विस्तार देने और विज्ञान संचारकों का बड़ा समूह तैयार करने के लिए कॉलेज जाने वाली छात्राओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम की शुरुआत की। गर्ल्स इन्टर्नशिप प्रोग्राम नाम के इस कार्यक्रम में स्थानीय महाविद्यालय में अध्ययनरत विज्ञान स्नातक कक्षाओं की 10 छात्राओं के बैच को अनुभव आधारित बाल विज्ञान कार्यशालाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के उपरांत ये छात्राएं दो-दो के समूह में अपने निकटवर्ती स्कूलों व गांवों में जाकर पांचवीं से नौवीं कक्षा के बच्चों के साथ इन कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं। प्रत्येक समूह को आगामी तीन माह के भीतर छह कार्यशालाएं सम्पन्न करनी होती हैं। प्रत्येक कार्यशाला के लिए उन्हें आवश्यक सामग्री व पांच सौ रुपये मानदेय के रूप में दिए जाते हैं। इन्टर्नशिप पूर्ण करने के उपरांत छात्राओं को प्रेरित किया जाता है कि वे अपने आसपास के बच्चों के साथ छुट्टियों में इन कार्यशालाओं का सशुल्क आयोजन करती रहेंगी। गर्ल्स इन्टर्नशिप प्रोग्राम का पहला चरण हिमवत्स के सचिव डॉ. गोविंद बल्लभ बिष्ट के व्यक्तिगत आर्थिक योगदान से सम्पन्न किया गया। छात्राओं को दो विषयों- मानव शरीर व कंकाल तंत्र की कार्यशालाओं का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम संचालन के दौरान हुई अतिवृष्टि व आपदा के बावजूद सभी इन्टर्न छात्राओं ने अपना निर्धारित लक्ष्य पूर्ण किया।

उपलब्धियां एवं प्रभाव

प्रशिक्षित छात्राओं के सभी पांच समूहों में चम्पावत क्षेत्र के 15 अलग-अलग गांवों में कुल 30 कार्यशालाएं आयोजित कीं। प्रत्येक समूह ने निर्धारित छह कार्यशालाएं कीं और प्रत्येक कार्यशाला के लिए उन्हें प्रति छात्रा 500 रुपये मानदेय के रूप में दिए गए। कार्यक्रम में की गईं कार्यशालाओं का विस्तृत विवरण निम्नवत् हैः

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 30

ग्रुप सं.	छात्रा का नाम	गांव का नाम	कार्यशाला शीर्षक	लाभान्वित बच्चे
1.	दीपा जोशी त्रिशा कुल्याल	मल्ली मादली	मानव शरीर	16
			मानव कंकाल	18
		पाली	मानव शरीर	30
			मानव कंकाल	17
		कोटा	मानव शरीर	19
			मानव कंकाल	18
2.	भावना बोहरा दीया देऊपा	ललुवापानी	मानव शरीर	20
			मानव कंकाल	18
		नघान	मानव शरीर	17
			मानव कंकाल	23
		खर्ककार्की	मानव शरीर	15
			मानव कंकाल	18
3.	पूजा जोशी रवीना सौन	कनलगॉव	मानव शरीर	15
			मानव कंकाल	16
		जैंतोली	मानव शरीर	15
			मानव कंकाल	17
		पवैत	मानव शरीर	18
			मानव कंकाल	18
4.	ज्योति महर निशा महर	कठाड़	मानव शरीर	16
			मानव कंकाल	15
		चैकी	मानव शरीर	17
			मानव कंकाल	15
		तल्ली चैकी	मानव शरीर	16
			मानव कंकाल	15
5.	सपना भण्डारी शिवानी गोस्वामी	शक्तिपुरबुंगा	मानव शरीर	20
			मानव कंकाल	18
		कफलांग	मानव शरीर	16
			मानव कंकाल	18
		जूप	मानव शरीर	15
			मानव कंकाल	18

इन्टर्नशिप के लक्ष्य पूर्ण करने के उपरांत सभी छात्राओं के उत्साह में उलेखनीय वृद्धि देखी गयी। विज्ञान के किसी विषय को खोज विधि से बच्चों के बीच आयोजित करने की प्रक्रिया में उन्हें स्वयं की समझ की कमियों और उन्हें दुरुस्त करने की जरूरत का अहसास हुआ। यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं को विज्ञान संचार में प्रशिक्षित करने का एक व्यावहारिक और कामयाब तरीका साबित हुआ है। उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले दिनों में यह कार्यक्रम पूरे जिले में अपना विस्तार कर पाने में सफल होगा।

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 31

एलायंस फॉर साइंस अभियान

राजीव नवोदय विद्यालय खटीमा के साथ बाल विज्ञान कार्यशाला

हिमवत्स संस्था प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के विज्ञान कार्यक्रम द्वारा शुरू किए गए 'एलायंस फॉर साइस' अभियान की भी साझेदार है। इस अभियान के अंतर्गत शिक्षा क्षेत्र में सक्रिय छोटी संस्थाओं व विद्यालयों के साथ अनुभव आधारित विज्ञान शिक्षा की संकल्पना एवं विधियों को साझा किया जाता है, ताकि गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण को शिक्षा की मुख्य धारा का हिस्सा बनाया जा सके।

दिनांक 26 तथा 27 मार्च 2022 को राजीव गांधी नवोदय विद्यालय खटीमा (ऊधमसिंह नगर) के आमंत्रण पर दो दिवसीय अनुभव आधारित विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विद्यालय की 48 छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला के प्रथम दिन प्रतिभागियों ने 'मानव शरीर' विषय को मॉडल निर्माण के माध्यम से समझने का प्रयास किया। इसके अंतर्गत छात्राओं को गत्ते की मदद से मानव शरीर और उसके मुख्य अंदरूनी अंगों को बनाना और उन्हें जोड़ना सिखाया गया। इस कार्यशाला से यद्यपि मानव शरीर की पूर्ण समझ नहीं बनती लेकिन शरीर के मुख्य अंगों की पहचान, उनका सही स्थान, नाम, आकार, विन्यास और उनकी एक व्यवस्थित संरचना का मोटा अंदाजा हो जाता है।

कार्यशाला के दूसरे दिन की शुरुआत प्रथम दिन की कार्यशाला पर चर्चा के साथ की गयी। तत्पश्चात 'खगोलः सूर्य, पृथ्वी एवं चन्द्रमा की व्यवस्था' विषय के अंतर्गत प्रतिभागियों ने सूर्य पृथ्वी व चन्द्रमा की व्यवस्था और उससे जुड़ी परिघटनाओं की समझ हासिल करने का प्रयास किया। छात्राओं ने पृथ्वी और चन्द्रमा की गतियों, दिन-रात का होना तथा पूर्णिमा व अमावस्या सहित चन्द्रमा की कलायें तथा सूर्य व चंद्र ग्रहण आदि के बारे में मॉडलों व रोलप्ले की मदद से अपनी समझ बनाई। कार्यशाला में छात्राओं की रुचि व तन्मयता देखने लायक थी।

कार्यक्रम के अन्त में राजीव गांधी नवोदय विद्यालय खटीमा के प्राचार्य श्री प्रमोद पाण्डेय द्वारा हिमवत्स संस्था का आभार व्यक्त करने के साथ दो दिवसीय कार्यशाला का समापन किया गया। ■

डेविड पेन्टर विद्यालय गुदमी के साथ बाल विज्ञान कार्यशाला

एलायंस फॉर साइंस के तहत दूसरा आयोजन बनबसा (चम्पावत) स्थित डेविड पेन्टर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गुदमी में दो दिवसीय अनुभव आधारित बाल विज्ञान कार्यशाला के रूप में किया गया। यह आयोजन 25 तथा 26 मई 2022 को सम्पन्न हुआ, जिसमें विद्यालय के 50 छात्र-छात्राओं ने 8 समूहों में भागीदारी की। कार्यशाला के पहले दिन प्रतिभागियों ने 'मानव शरीर' विषय के अंतर्गत गत्ते की मदद से शरीर के मुख्य अंदरूनी अंगों को तैयार कर उन्हें जोड़ा। मॉडल तैयार करने के बाद प्रतिभागियों ने ग्रुप में क्रमानुसार आगे आकर बनाये गए मॉडल के बारे में प्रस्तुतीकरण किया। दूसरे दिन कार्यशाला का विषय था- मानव कंकाल। प्रतिभागियों ने पुनः आठ के समूह में गत्ते से सुंदर मॉडल तैयार किए और उस पर समूह चर्चा के बाद अपने-अपने मॉडलों के साथ प्रस्तुतीकरण भी किया। आयोजन के समापन पर प्रतिभागी छात्र/छात्राओं ने कार्यशाला में हुए अनुभवों को अपने-अपने विचारों के माध्यम से प्रकट किया। अंत में विद्यालय की विज्ञान प्रबन्धन समिति ने संदर्भ दाताओं व हिमवत्स संस्था का आभार व्यक्त किया।

विज्ञानशाला इंटरनेशनल के साथ साझेदारी

भारत के दूरस्थ व गरीब परिवारों के छात्र-छात्राओं की अकादमिक सहायता के लिए समर्पित कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में भारतीय मूल के विद्यार्थियों की संस्था 'विज्ञानशाला इंटरनेशनल' के साथ हिमवत्स-साविद्या की साझेदारी भी इस वर्ष की एक महत्वपूर्ण उपलब्धियों में एक है। विज्ञानशाला इंटरनेशनल ने स्थानीय महाविद्यालय में विज्ञान स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत 10 छात्राओं को अपने मेंटरिंग कार्यक्रम के लिए चयनित किया। उन्होंने हिमवत्स से आग्रह किया कि वह इन छात्राओं को अपनी अनुभव आधारित विज्ञान कार्यशालाओं का प्रशिक्षण दे ताकि वे स्कूली बच्चों के साथ इनका आयोजन कर अपना क्षमता संवर्धन कर सकें। उल्लेखनीय है कि विज्ञानशाला इंटरनेशल द्वारा चयनित छात्राओं में चार इससे पहले हिमवत्स गर्ल्स इंटर्नशिप प्रोग्राम में हिस्सा ले चुकी हैं। ■

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 33

हिमवत्स एस्ट्रोनॉमी इनीशिएटिव

विद्यालयों में खगोल कार्यशाला

हिमवत्स की ओर से अंतरिक्ष विज्ञान में बच्चों की रुचि जगाने के लिए क्षेत्र के सेवित एवं असेवित विद्यालयों में इस वर्ष से एस्ट्रोनॉमी इनीशिएटिव की शुरुआत की गई है। इसके अंतर्गत पहले चरण में विभिन्न विद्यालयों में 'खगोलः सूर्य, पृथ्वी एवं चंद्रमा की व्यवस्था' पर मनोरंजक कार्यशाला का आयोजन किया गया। अगस्त माह से चम्पावत ब्लॉक के विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इस कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। अब तक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कुलेठी, डुंगरासेठी, खर्ककार्की, जनता उच्च माध्यमिक विद्यालय मुडियानी और राजकीय बालिका इण्टर कालेज चम्पावत में खगोल कार्यशाला आयोजित की जा चुकी है। इस अत्यंत लोकप्रिय कार्यशाला का आयोजन आगे भी जारी रहेगा। इस श्रृंखला के अगले चरण में 'आओ पढ़ें आसमान की किताब' नामक कार्यशाला के माध्यम से रात्रिकालीन आकाश को समझने की विधियां बताई जाएंगी।

खगोल कार्यशाला का उदेश्यः इस कार्यशाला का उद्देश्य छात्र-छात्राओं को सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा की व्यवस्था और उनसे जुड़ी परिघटनाओं की समझ पैदा करना है। इसमें उन्हें पृथ्वी तथा चन्द्रमा की गतियों, दिन व रात का होना, पूर्णिमा तथा आमावस सहित चन्द्रमा की कलाओं तथा सूर्य व चन्द्रग्रहण के बारे में मॉडलों व रोल प्ले की मदद से सीखने का मौका मिलता है। इसके अलावा बच्चे पृथ्वी व चंद्रमा के परिक्रमण तल व मौसम परिवर्तन पर बेहद प्रभावशाली मॉडल भी तैयार करते हैं। अब तक विभिन्न विद्यालयों में सम्पन्न खगोल कार्यशालाओं का विवरण निम्नवत हैः

क्र.	विद्यालय का नाम	लाभान्वित छात्र संख्या
1	रा.उ.प्रा.वि. डुंगरासेठी	16
2	रा.उ.प्रा.वि. खर्ककार्की	28
3	रा.उ.प्रा.वि. कुलेठी	30
4	ज.उ.मा.वि. मुडियानी	26
5.	रा.बा.इ.का. चम्पावत	38
	कुल लाभान्वित छात्र	139

विविध गतिविधियां

नवोदय प्रवेश परीक्षा की तैयारी

हिमवत्स संस्था विगत कई वर्षों से प्रतिवर्ष शीतकालीन अवकाश के दौरान सेवित क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत मेधावी एवं जरूरतमंद बालक-बालिकाओं को नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा के लिए तैयार करती है। इसके लिए बच्चों के लिए विशेष कक्षाओं का संचालन किया जाता है जिसमें जवाहर नवोदय विद्यालय के प्रशिक्षित शिक्षक प्रवेश परीक्षा में चयनित होने के लिए विषयवार प्रशिक्षण देते हैं। जवाहर एवं राजीव नवोदय प्रवेश परीक्षा हेतु अंगीकृत विद्यालयों के अलावा अन्य स्थानीय विद्यालयों के छात्र/छात्राओं के लिए मॉक प्रश्न पत्र' तैयार किया जाता है। संस्था के इन प्रयासों से प्रतिवर्ष अनेक विद्यार्थी नवोदय प्रवेश परीक्षा में सफल होते हैं।

कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम

विद्यालयों में उपयोग:

हिमवत्स संचालित केन्द्र कुलेठी में उपलब्ध 5 कम्प्यूटर तथा 2 लेपटॉप के माध्यम से कक्षा 1 से 8 तक के छात्र/छात्रा लाभान्वित होते आ रहे है। यहां बच्चों को प्रतिदिन समय सारिणी के अनुसार कार्यक्रम निर्धारित किया गया है, जिसमें बच्चे मनोयोग से कम्प्यूटर का उपयोग कर रहे हैं।

विद्यालयों के अतिरिक्त उपयोग:

निःशुल्क कम्प्यूटर कोर्स के माध्यम से कुलेठी, डड़ा बिष्ट, ताराचौड़, तिलौन तथा छतार आदि क्षेत्रों के इंटरमीडिएट उत्तीर्ण कर चुके छात्र/छात्राओं हेतु निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। यह कार्यक्रम तीन-तीन माह के दो बैचों में सम्पन्न हुआ। कोर्स कराने का संस्था का मुख्य उद्देश्य छात्रों को स्वावलम्बी बनाना था।

कम्प्यूटर कोर्स में सीखी एवं सिखायी गयी जानकारियां :

1. छात्रों को सर्वप्रथम कम्प्यूटर की सामान्य जानकारी, जैसे- कम्पयूटर का वर्तमान समय में प्रयोग तथा कम्प्यूटर खोलना तथा बन्द करना।
2. इनपुट (की-बोर्ड, माउस आदि) आउटपुट (प्रिन्टर, मॉनीटर आदि) डिवाइसों के बारे में बताना।
3. छात्रों को कम्प्यूटर में कार्य करने से पहले पेंटब्रश में काम करना सिखाना।
4. एमएस ऑफिस के अन्तर्गत एमएस वर्ड में हिन्दी तथा अंग्रेजी टाइपिंग करना, कट, कॉपी, पेस्ट, टेबल बनाना तथा पेज सेट करना आदि सिखाया गया।
5. एमएस ऑफिस के अन्तर्गत एक्ससेल में सेल की मदद से टेबल में डॉटा एड कर गणितीय संक्रिया (जोड़ना, घटाना आदि) करना।
6. एमएस आफिस के अन्तर्गत पॉवर प्वाइंट में रिपोर्ट की स्लाइड बनाकर प्रजेंटेशन तैयार करना।
7. गूगल की जानकारी, ई-मेल लिखना तथा अपने मित्रो को मेल करना तथा मेल प्राप्त करना।

विद्यालयों में डिजिटल शिक्षण

1. संस्था के स्वयंसेवकों द्वारा एनसीईआरटी के कोर्स के तहत राजकीय विद्यालयों के कक्षा 1 से 8 तक के छात्र/छात्राओं को प्रोजेक्टर व लैपटॉप के माध्यम से ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कोर्स के अनुसार महत्वपूर्ण गतिविधियों को पढ़ाया जा रहा है।
2. इंटरनेट के माध्यम से बच्चों को ई-मेल अंकाउट बनाना, ऑनलाइन शिक्षा व आधुनिक समय में ऑनलाइन सेवा के बारे में कार्यशालाओं के माध्यम से सिखाया जाता है।
3. छात्र/छात्रा अपनी शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को इंटरनेट में स्वयं खोजकर उनका हल खोजने का प्रयास करते हैं।
4. विज्ञान के प्रयोगों को पाठ्यक्रम के अनुसार रोचक व सरल बनाने का प्रयास किया जाता है साथ ही क्षेत्र के आस-पास के विद्यालयों में कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं।

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 35

चक्रीय पुस्तकालय एवं विद्यार्थी पुस्तक मेले

रा.प्रा.वि. कुलेठी परिसर में हिमवत्स संचालित केन्द्र के माध्यम से एक चक्रीय पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 2005 में गई। पुस्तकालय का मुख्य उददेश्य छात्र/छात्राओं एवं आस-पास के लोगों को पुस्तकों के माध्यम से जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना है। बिना पुस्तकों के द्वारा हर व्यक्ति का जीवन अधूरा है क्योंकि पुस्तकें विषम परिस्थिति में मनुष्य की सहायक होती है। किताबों में हर मुश्किल सवाल परिस्थिति का हल छुपा होता है। इंसान किसी भी दुविधा में रहे किताबों को पढने से समझने से उसकी सोच का विकास होता है।

चक्रीय पुस्तकालय लगभग 3300 पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसमें मनोरंजन के अतिरिक्त विज्ञान, गणित, हिन्दी व्याकरण, सामान्य ज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इतिहास, धार्मिक, जवाहर एवं राजीव नवोदय प्रवेश परीक्षा, प्रतिभा खोज तथा कम्प्यूटर की परीक्षाओं के लिये उपयोगी पुस्तकें हैं। पुस्तकालय से अन्य विद्यालयों के विद्यार्थी भी लाभान्वित हो रहे है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में महापुरुषों तथा स्वतंत्रता सेनानियो के जीवन पर आधारित पुस्तकें भी हैं। ग्राम वासी भी इन पुस्तकों में रुचि लेते हैं। इसके अतिरिक्त मेडिकल, एनडीए, इंजीनिरिंग आदि प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी हेतु भौतिक, रसायन, जीव विज्ञान, तथा गणित आदि विषयों से सम्बंधित पुस्तकें भी उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे विद्यार्थी अपना भविष्य बना सकें। ऐसे विद्यार्थी जो बाजार से पुस्तकें खरीद पाने में असमर्थ हैं वे इस पुस्तकालय का लाभ उठा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त हिमवत्स मुख्य कार्यालय डड़ा में प्रति सप्ताह स्वयंसेवकों के माध्यम से गांव के बच्चों एवं लोगों को नियमित रूप से चक्रीय पुस्तकालय का लाभ प्राप्त हो रहा है।

संस्था द्वारा छात्र-छात्राओं में पढ़ने की ललक पैदा करने हेतु समय-समय पर विभिन्न क्षेत्रों में पुस्तक मेलों का आयोजन किया जाता है। पुस्तक मेले में राजकीय प्राथमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं को पुस्तकों के माध्यम से कहानियां सुनाने, पढ़ने इत्यादि गतिविधियां की जाती हैं। इसके अलावा बच्चों में पढ़ने की क्षमता और याद करते की आदत विकसित करने आदि की जानकारी दी जाती है। इस अवसर पर बच्चे अत्यंत मनोयोग से व अपनी इच्छा अनुसार किताबों का चयन कर बारी-बारी से कहानियां सुनाते हैं।

विद्यालयों में प्रतिभा दिवस

संस्था स्वयंसेवकों द्वारा समय-समय पर विद्यालयों में प्रति सप्ताह होने वाले प्रतिभा दिवस में भी छात्र/छात्राओं के साथ विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया जाता आ रहा है। जैसे- सामान्य ज्ञान, भाषण, निबन्ध, वाद-विवाद, खेल क्रीड़ा, गणितीय, कला, क्राफ्ट, व श्रम के कार्य, गीत व नृत्य आदि। प्रतियोगिताओं का आयोजन माह के प्रथम तथा अन्तिम शनिवार को किया जाता है। इनमें यह देखने के लिए बच्चों का मूल्यांकन किया जाता है कि उनका मानसिक स्तर एवं रुचि किस प्रकार की है ताकि बच्चों में सीखने एवं विद्यालय आने की प्रवृत्ति नियमित रूप से बनी रहती है और उनमें नये-नये कौशलों को सीखने का विकास हुआ है। ■

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 36

गैर-अकादमिक क्रियाकलाप

साविद्या स्मारिका 2021 का विमोचन

साविद्या स्मारिका के 14वें अंक के विमोचन कार्यक्रम का आयोजन 30 दिसम्बर 2021 को सी.डी.एल.ए.एस.आर.सी. कैम्पस, प्राथमिक तथा जूनियर विद्यालय कुलेठी में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. कीर्ति बल्लभ सक्टा (संस्कृतविद्) तथा विशिष्ट अतिथि श्री सत्यनारायण (डी.ई.ओ. बेसिक), श्री संजय शुक्ला (प्रधानाचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय) तथा श्री देवीलाल वर्मा थे। कार्यक्रम का संचालन हिमवत्स सदस्य श्री राजेन्द्र गहतोड़ी ने किया गया तथा हिमवत्स संस्था का कार्यवृत्त प्रस्तुत किया।

वक्ताओं ने हिमवत्स संस्था द्वारा चम्पावत क्षेत्र में की जा रही गतिविधियों की सराहना की और कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि क्षेत्रों में संस्था की ओर से किये जा रहे कार्यो के बारे में बताया। इस मौके पर ग्राम प्रधान डड़ा बिष्ट श्री सुन्दर सिंह नेगी, श्री कैलाश पाण्डेय, श्री टी.डी. पाण्डेय, डॉ. एम.पी. जोशी, श्री भूपेश देव, श्री नवीन पंत, श्री रुद्र सिंह बोहरा, श्री नवीन रस्यारा, श्री आदित्य अवस्थी, श्री जूबेर अली खान, श्रीमती रेखा जोशी, श्रीमती जानकी आर्या तथा हिमवत्स स्वयंसेवक आदि उपस्थित रहे। वक्ताओं ने हिमवत्स के संरक्षक प्रो. एच.डी. बिष्ट के इस कदम को आगे बढ़ाने हेतु क्षेत्र के लोगों को आगे आने का आह्वान किया ताकि संस्था अपने पथ पर निरन्तर प्रगति करे। अन्त में श्री गहतोड़ी जी ने सभी आगन्तुकों का आभार प्रकट किया तथा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट करने के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

पृथ्वी दिवस समारोह

दिनांक 22 अप्रैल 2022 को संस्था ने राजकीय प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालय कुलेठी के छात्र-छात्राओं के साथ पृथ्वी दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरूआत बच्चों को प्रोजेक्टर के माध्यम से पृथ्वी दिवस के बारे में जानकारी देने के साथ की गयी। इसके अलावा पृथ्वी एवं पर्यावरण को बचाने के लिए प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालय के बच्चों की पेन्टिग प्रतियोगिता करायी गयी। इस कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक एवं हिमवत्स स्वयंसेवक उपस्थित थे।

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 37

गैर-अकादमिक क्रियाकलाप

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च 2022 को हिमवत्स संस्था ने प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्र कुलेठी में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती जानकी कुलेठा (वरिष्ठ महिला) थीं। कार्यक्रम का संचालन श्री रुद्र सिंह बोहरा (प्रधानाध्यापक जूनियर विद्यालय) ने किया। कार्यक्रम में

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 38

गैर-अकादमिक क्रियाकलाप

संस्था के सेवित क्षेत्र की महिलाएं तथा विद्यालय की छात्राएं उपस्थित रही। कार्यक्रम में श्रीमती कविता वर्मा ने महिलाओं के अधिकार तथा कार्यों पर विस्तृत जानकारी देकर जागरूक करने के साथ-साथ इस आयोजन के लिए हिमवत्स संस्था तथा आंगनबाड़ी केंद्र का आभार व्यक्त किया।

काला मोतिया (ग्लूकोमा) जागरूकता सप्ताह

हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति डड़ा-चम्पावत विगत 1997 से क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण तथा सामान्य जागरूकता जगाने का कार्य कर रही है। संस्था क्षेत्र में सामान्य जागरूकता लाने के क्रम में इस वर्ष 6 मार्च से 12 मार्च 2022 तक काला मोतिया जागरूकता सप्ताह के रूप में मनाया। सप्ताह के अन्तिम दिन 12 मार्च को प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालय के छात्रों, अभिभावकों की एक गोष्ठी सी.डी.एल.ए.एस.आर.सी. प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालय परिसर में आयोजित की गयी।

कार्यक्रम में डॉ. जी.बी. बिष्ट ने निकटवर्ती ग्रामीण महिलाओं की आंखो की जांच की गयी। जांच के उपरान्त श्रीमती नारायणी देवी पत्नी श्री गोविन्द राम ग्राम- कुलेठी को मोतिया बिन्द के आपरेशन हेतु जिला अस्पताल चम्पावत में होने वाले आगामी कैम्प के लिए संस्तुत किया गया। डॉ. बिष्ट ने काला मोतिया (ग्लूकोमा) को अंधता का मोतिया बिन्द के बाद दूसरा सबसे बड़ा कारण बताया। इस बीमारी में आंख को रोशनी देने वाली नसें सूख जाती है। इस बीमारी को दृष्टि चोर बीमारी भी कहा जाता है, क्योंकि रोशनी कब गयी पता ही नहीं चलता है तथा इस प्रकार एक बार जा चुकी रोशनी फिर कभी लौटती नहीं है।

समय-समय पर आंख की जांच कराने तथा शुरू में ही ग्लूकोमा बीमारी का पता चलने पर रोगी को नेत्रहीन होने से बचाचा जा सकता है। इस कार्यक्रम में ग्राम प्रधान डड़ा बिष्ट श्री सुन्दर सिंह नेगी, सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र गहतोड़ी, दोनों विद्यालयों के प्रधानाध्यापक श्री रुद सिंह बोहरा, नवीन चन्द्र रस्यारा, शिक्षक शिक्षिका, संस्था स्वयंसेवक, अभिभावक, छात्र, छात्राएं एवं क्षेत्र के बुजुर्ग जन मौजूद रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस 2022

विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर 4 जून 2022 को राजकीय पूर्व माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय कुलेठी के प्रांगण में हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति डड़ा चम्पावत के तत्वाधान में पर्यावरण दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री हेम चन्द्र गहतोड़ी, सहायक वन संरक्षक तथा अध्यक्ष डा. भुवन चन्द्र जोशी रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेन्द्र गहतोड़ी ने किया।

सर्वप्रथम छात्र/छात्राओं की कला, लिखित तथा मौखिक क्विज प्रतियोगिताऐं सम्पन्न करायी गयीं। इसके पश्चात अतिथियों द्वारा वृक्षारोपण कार्य किया गया। इसके बाद गोष्ठी का आयोजन हुआ राजकीय पू.मा.वि. के प्रधानाध्यापक श्री रुद्र सिंह बोहरा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाये जाने के बारे में जानकारी प्रदान की। मुख्य अतिथि श्री हेम चन्द्र जोशी ने वनों के संरक्षण एवं परितंत्र को स्वच्छ व सबल बनाने का आह्वान किया तथा वनाग्नि से जंगल की सुरक्षा के प्रति जागरूक रहने को कहा।

प्रतियोगिता में जूनियर स्तर के छः विद्यालयों रा.पू.मा.वि. कुलेठी, खक्रकार्की, डुंगरासेठी, रा.मा.वि. फुंगर, रा.इ.का. चम्पावत और ज.मा.वि. मुड़ियानी ने प्रतिभाग किया जिसमें कुल 31 प्रतिभागी थे। प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम में सर्व श्री ब्रजमोहन डिप्टी रेंजर, चतुर सिंह वन दरोगा, घनश्याम फुलारा वन दरोगा, अक्षय वर्मा, दिनेश भट्ट, राजेन्द्र कुमार, नवीन चन्द्र रस्यारा स.अ., त्रिभुवन सोराडी, शिक्षक/शिक्षिकाऐं तथा हिमवत्स स्वयंसेवक उपस्थित थे।

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 39

गैर-अकादमिक क्रियाकलाप

विश्व योग दिवस कार्यक्रम

18 जून 2022 को हिमवत्स संस्था के सहयोग से कुलेठी विद्यालय परिसर में विश्व योग दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्था के सदस्य तथा योग प्रशिक्षित राजेन्द्र गहतोड़ी के निर्देशन में प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालय कुलेठी तथा क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों और महिलाओं ने योगाभ्यास किया। श्री गहतोड़ी द्वारा बच्चों को योग के विभिन्न आसनों जैसे- अनुलोम-विलोम, ताड़ासन, त्रिकोणासन, चक्रासन तथा पद्मासन आदि को सिखाया गया। कार्यक्रम में छात्रों को बताया गया कि प्रतिदिन योग करने से किस प्रकार मानसिक तथा शारीरिक विकास होता है, जिससे हम बीमारियों आदि से बच सकते हैं। इस अवसर पर प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य नवीन चंद्र रस्यारा, रुद्र सिंह बोहरा (प्रधानाचार्य, जू.वि. कुलेठी), उमेश

चंद्र जोशी, कामिनी वर्मा, मुन्नी अधिकारी, प्रकाश पुनेठा, पंकज बोहरा, मुक्तेश पचैली, राजीव भण्डारी तथा तुलसी प्रसाद आदि उपस्थित रहे। ■

हरेला सप्ताह बीज बॉल से हरियाली

हिमवत्स संस्था ने बीज बॉल (गुरिल्ला गार्डनिंग) के माध्यम से दिनांक 11 से 17 जुलाई तक हरेला सप्ताह मनाया। इसके अंर्तगत विभन्न विद्यालयों- राजकीय प्राथमिक कुलेठी, खर्ककार्की, चम्पावत, राजकीय उच्च प्राथमिक खर्ककार्की, राजकीय बालिका इण्टर कालेज के बच्चों ने चम्पावत में मिट्टी, खाद, बीज व पानी द्वारा बीज बॉल बनाकर स्थानीय पेड़-पौधे उगाने की गतिविधि की। पर्यावरण सुरक्षा हेतु पेड़-पौधों को बढ़ाने का यह सराहनीय प्रयास था। इसमें बच्चों को स्थानीय प्रजाति के पेड़-पौधों के बीजों को मिट्टी की बॉल में डालकर फैलाना सिखाया गयां। इसके अलावा बच्चों व उनके अभिभावकों से स्थानीय वनस्पतियों के महत्व की जानकारी प्राप्त की गयी।

कार्यक्रम की शुरूआत स्वयंसेवकों की मदद से बच्चों द्वारा मिट्टी, खाद, बीज व पानी के मिश्रण की सहायता से 5 विद्यालयों के 85 बच्चों द्वारा विभिन्न प्रजाति के बीजों (चकोतरा, कटहल, नीबू, माल्टा, आड़ू, पुलम, बांज, अकेसिया आदि) से 263 बीज बॉल तैयार किये गये। इस दौरान बच्चों ने बड़ी उत्सुकता के साथ कार्य किया गया। इसके उपरान्त बीज बॉलों को बंजर जमीन पर जगह-जगह बिखेर दिया जाता है। बीज बॉल में नमी बनी रहती है और बीजों के अंकुरित होने पर यह फटने लगती हैं। कुछ समय के बाद अंकुरित बीजों से पौधे निकलने लगते हैं। ■

गैर-अकादमिक क्रियाकलाप

37वां नेत्रदान पखवाड़ा (25 अगस्त से 8 सितम्बर 2022)

मवत्स संचालित केन्द्र कुलेठी में संस्था के सचिव डॉ. जी.बी. बिष्ट द्वारा 5 सितम्बर 2022 का 37वें नेत्रदान पखवाड़ें के अर्न्तगत रा.प्रा. एवं उ.प्रा.वि. कुलेठी के बच्चों का नेत्र परीक्षण किया गया तथा उन्हें नेत्रदान के बारे में जानकारी दी गयी। इस इन शिक्षक दिवस के अवसर पर डॉ. बिष्ट ने विद्यालय के शिक्षकों को शिक्षक दिवस की बधाई दी और उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि आंख के कॉर्निया में खराबी आ जाने पर दृष्टि में आश्चर्यजनक रूप से कमी आ जाती है। उन्होंने बताया कि इन कमियों को किस प्रकार ठीक किया जा सकता है।

डॉ. बिष्ट ने जानकारी दी कि नेत्रदान परिवार की सहमति होने पर दानदाता की मृत्यु के उपरान्त बाद कब और कितने समय के भीतर किया जाता है। निकाले गए नेत्रों को नेत्रबैक में जमा करने की सुविधा हल्द्वानी स्थित सुशीला तिवारी मेडिकल कॉलेज में है। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं संस्था स्वयंसेवक व छात्र/छात्राएं उपस्थित थे।

विश्व दृष्टि दिवस

संस्था के द्वारा अक्टूबर माह के द्वितीय सप्ताह में दिनांक 13 अक्टूबर को हिमवत्स संचालित केन्द्र कुलेठी कैम्पस (राजकीय प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालय) मे विश्व दृष्टि दिवस 'विषयः आंखों को प्यार करो' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिमवत्स सचिव एवं नेत्र चिकित्सक डा. जी.बी. बिष्ट ने आस-पास के लोगों तथा विद्यालय के छात्र-छात्राओं की आंखों की जांच की। उन्होंने अंधेपन व दृष्टि नुकसान की ओर ध्यान केन्द्रित कर अंधेपन की रोकथाम व दृष्टिहीन होने से बचने के उपाय बताये। आंखों को कैसे स्वस्थ रखा जाय, इस पर भी चर्चा की गयी।

13 सितम्बर 2022 को जिलाधिकारी नरेन्द्र सिंह भंडारी ने हिमालय वाटर सर्विस तथा विकास एवं पर्यावरण संरक्षण समिति के सचिव डा. जी.बी. बिष्ट के आग्रह पर राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय कुलेठी स्थित हिमवत्स विज्ञान संचालित केन्द्र में निरीक्षण किया। इस अवसर पर डा. बिष्ट ने जिलाधिकारी महोदय को संस्था की ओर से चलाई जा रही गतिविधियों से अवगत कराया। जिलाधिकारी ने परिसर में स्थित राज्य की एक

जिला अधिकारी का सी.डी.एल.ए.एस.आर.सी. निरीक्षण

मात्र अटल टिंकरिंग लैब का भी निरीक्षण किया और जूनियर विद्यालय के बच्चों द्वारा सीखे गये प्रयोगों, यथा- थ्री डी प्रिंटर, ड्रोन आदि का अवलोकन किया।

जिलाधिकारी श्री भंडारी ने हिमवत्स संचालित विज्ञान केन्द्र का भी निरीक्षण किया और विज्ञान प्रयोगशाला में स्वयंसेवकों द्वारा बच्चों के बीच किए जाने वाले प्रयोगों की जानकारी प्राप्त की। उन्हें संस्था की अन्य गितिविधियों (कम्प्यूटर लैब, पुस्तकालय, डिजिटल आदि) से भी अवगत कराया गया।

जिलाधिकारी ने रा.प्रा.वि. कुलेठी का भी निरीक्षण किया, जिसे वर्तमान में 49 छात्र संख्या के साथ एकल अध्यापक द्वारा संचालित किया जा रहर है। श्री भंडारी ने शिक्षा अधिकारी को विद्यालय में एक और शिक्षक की तैनाती के लिए निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने कैम्पस में चल रहे निर्माण कार्य जल्दी पूरा किये जाने का आश्वासन भी दिया गया।

इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी श्री चन्दन सिंह बिष्ट, हिमवत्स संस्था के सदस्य श्री राजेन्द्र गहतोड़ी, ग्राम डड़ा बिष्ट के ग्राम प्रधान सुन्दर सिंह नेगी विद्यालय के प्रधानाचार्य व समस्त शिक्षक शिक्षिकायें, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं हिमवत्स के स्वयंसेवक उपस्थित थे।

कुलेठी विद्यालय परिसर में भवन निर्माण के लिए प्रयास

1. रा.प्रा.वि. कुलेठी में बालक-बालिकाओं को बैठने हेतु कक्षा-कक्षों की कमी को देखते हुए शिक्षा विभाग चम्पावत द्वारा वर्ष 2007 में हिमवत्स संस्था के प्रयासों से एक कक्ष का निर्माण किया गया।
2. रा.प्रा.वि. कुलेठी में संस्था के सहयोग से लोकसभा सांसद श्री बच्ची सिंह रावत जी द्वारा स्वीकृत सांसद निधि से वर्ष 2008-09 में निर्मित अतिरिक्त कक्ष का निर्माण किया गया।
3. रा.प्रा.वि. कुलेठी में साविद्या उप-समिति के सौजन्य से 'साइंस रिसोर्स सेंटर' भवन का निर्माण वर्ष 2009 में राज्यसभा सांसद कैप्टन सतीश शर्मा जी द्वारा प्रदत्त सांसद निधि से किया गया।
4. रा.प्रा.वि. कुलेठी कैम्पस में जनपद प्रभारी राज्यमंत्री श्रीमती रेखा आर्य द्वारा स्वीकृत जिला योजना चम्पावत के माध्यम से साइंस रिसोर्स सेन्टर के प्रथम तल में निमार्णाधीन हॉल का कार्य किया जा रहा है।
5. रा.प्रा.वि. कुलेठी परिसर में एक अतिरिक्त कक्ष का निर्माण जिला योजना के अंतर्गत किया गया।
6. रा.प्रा.वि. कुलेठी परिसर में अटल लैब स्थापित किये जाने

गैर-अकादमिक क्रियाकलाप

हेतु जिलाधिकारी महोदय द्वारा 'डीएम अनटाइड फंड' के अन्तर्गत भवन निर्माण की प्रक्रिया वर्तमान में गतिमान है।

राष्ट्रीय गणित दिवस

हिमवत्स संस्था द्वारा सी.डी.एल.ए.एस.आर.सी. कुलेठी परिसर में 22 दिसम्बर 2021 को राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया गया। यह दिन महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम की विरासत का सम्मान करने हेतु पूरे देश में राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर प्राथमिक तथा जूनियर विद्यालय कुलेठी में छात्र/छात्राओं ने गत्ते की सहायता से गणित की गतिविधियां कीं।

सिलाई मशीनों का अनुरक्षण

दिनांक 4 जनवरी को औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान चम्पावत की शिक्षिका शबाना परवीन ने संस्था की सिलाई मशीनों की जांच की। साथ ही मशीनों में आयी छोटी-मोटी खराबियों को सही किया। उन्होंने मशीन में लगे हुए प्रत्येक पुर्जे को निकाल कर साफ किया और उनको निर्धारित स्थान पर लगाने की जानकारी भी दी गयी। इस गतिविधि में संस्था स्वयंसेवको द्वारा सहयोग किया गया।

हिमवत्स साविद्या ग्रामोत्थान कार्यक्रम

हिमवत्स साविद्या समिति ने वर्ष 2021-2022 में ग्राम डड़ा बिष्ट ग्रामोत्थान कार्यक्रम के तहत 'श्री यशपाल बोहरा-कमला' परिवार को विशेष सहायता हेतु चुना है। उक्त दम्पति के दो बच्चे हैं। पुत्र रोहन कक्षा 8 तथा पुत्री मोनिका कक्षा 5 में पढ़ रही है। इन दोनों बच्चों के शैक्षिक उन्नयन के लिए ट्यूटर श्रीमती जानकी बिष्ट को मानदेय दिया जाता है जो इन्हें प्रतिदिन पढ़ाती हैं। इन बच्चों को नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा के लिए विशेष रूप तैयार किया जा रहा है। हिमवत्स संचालित केन्द्र के द्वारा दोनों बच्चों को नवोदय प्रवेश परीक्षा की पुस्तकें तथा नोट बुक भी दी गयी है।

थाल सेवा हेतु सहयोग

हिमवत्स संस्था विगत वर्षो से डा. सुशीला तिवारी राजकीय चिकित्सालय हल्द्वानी नैनीताल में थाल सेवा एवं उपचार सेवा में सहयोग कर रही है। यह कार्यक्रम लिटिल मिरैकल्स फाउण्डेशन, हल्द्वानी के माध्यम से गरीब रोगियों व उनके तीमारदारों हेतु सस्ती भोजन व्यवस्था के लिए चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत चिकित्सालय के बाहर मात्र 5 रुपये प्रतिथाली भोजन उपलब्ध रहता है। कोई भी व्यक्ति वहां जाकर भोजन कर सकता है, जिसके लिए हिमवत्स संस्था द्वारा इस वर्ष 80,000 रुपए की धनराशि दानस्वरूप दी गयी है। ■

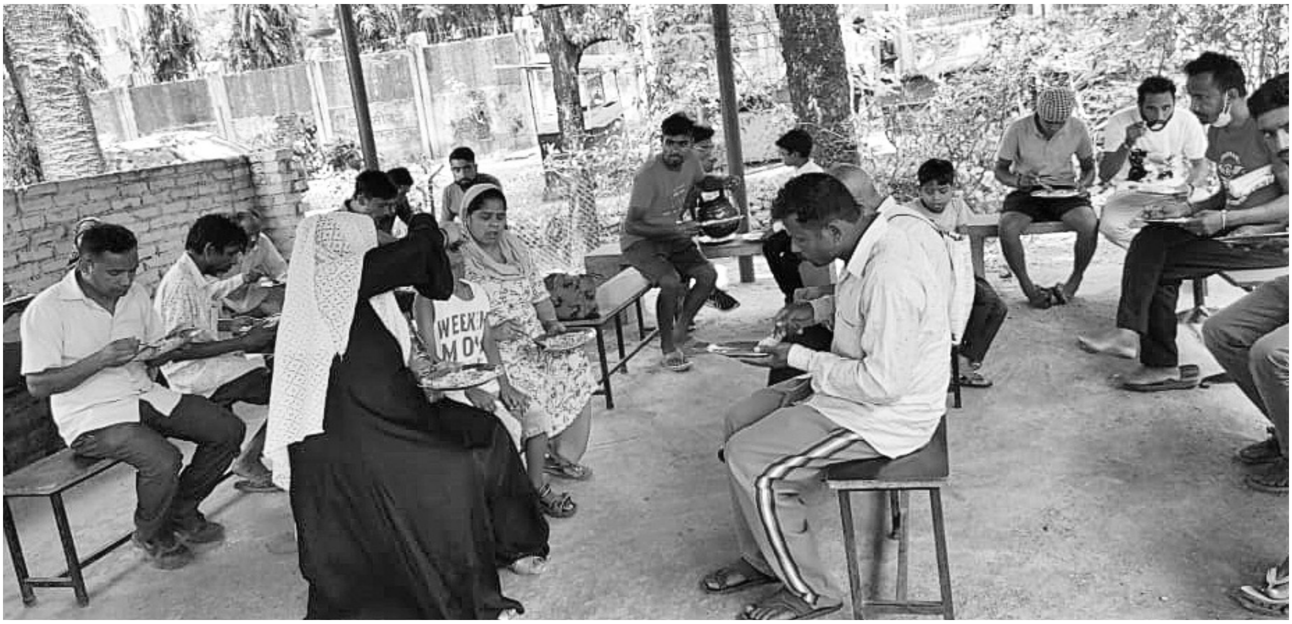

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 43

छात्रवृत्ति विवरण समारोह 2022

दिनांक 10 नवम्बर 2022 को राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय कुलेठी स्थित हिमवत्स विज्ञान संचालित केन्द्र में छात्रवृत्ति वितरण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नगर पालिका अध्यक्ष श्री विजय वर्मा एवं मुख्य शिक्षा अधिकारी श्री जितेन्द्र सक्सेना तथा संचालन हिमवत्स कायकारिणी सदस्य श्री राजेन्द्र गहतोड़ी ने किया। सर्वप्रथम डॉ. बी.सी. जोशी ने कार्यक्रम की रूपरेखा के साथ-साथ संस्था की गतिविधि की जानकारी दी। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कुलेठी के बच्चों ने स्वागत गीत एवं वन्दना प्रस्तुत की।

ये छात्रवृत्तियां चम्पावत, नैनीताल तथा पिथौरागढ़ जिले के विभिन्न विद्यालयों के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, हाईस्कूल तथा इण्टरमिडिएट स्तर के गरीब एवं मेधावी विद्यार्थियों को दी जाती है। छात्रवृत्ति वितरण का कार्यक्रम वर्ष 2005 से निरंतर चल रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं में पढ़ने के प्रति स्पर्धा जगाना है। छात्रवृत्ति राशि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक के लिए रुपया 1000 प्रति छात्र, हाई स्कूल के लिए रुपया 1500 प्रति छात्र तथा इण्टर मिडिएट के लिए रुपया 2500 प्रति छात्र है।

छात्रवृत्ति की धनराशि प्रो. बिष्ट के द्वारा स्वयं, उनके कुटुम्बजनों, सम्बन्धियों, संस्था के प्रति अपनी प्रतिबद्धता रखने वाले सहयोगियों, चिकित्सकों के योगदान तथा स्व. डॉ. आर.सी. पन्त द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती गिरिबाला के नाम से जमा धनराशि के ब्याज से दी जा रही है। वर्ष 2005 से अब तक कुल 1264 विथार्थियों को लगभग 22 लाख धनराशि की छात्रवृत्ति दी जा चुकी है। इस वर्ष 98 छात्र-छात्राओं को 1 लाख 87 हजार रुपए की धनराशि वितरित की जा रही है। यह धनराशि छात्र-छात्राओं के बैंक खातों में जमा की जा रही है तथा उन्हें छात्रवृत्ति प्रमाण पत्र भी दिया जा रहा है।

इस कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी बेसिक श्री सी.एस. बिष्ट, कार्यक्रम संचालक श्री राजेन्द्र गहतोड़ी, संस्था सचिव डॉ. जी.बी. बिष्ट, संस्था सहयोगी डॉ. बी.सी. जोशी, श्री अमर नाथ वर्मा, श्री बी.डी. फुलारा, डॉ. एम.पी. जोशी, श्री जगदीश सिंह अधिकारी, श्री टी.डी. पाण्डेय, श्री लोकमणी पन्त, प्रधान श्री सुन्दर सिंह नेगी, विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचाय, शिक्षक/शिक्षिकाएं एवं आंगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकत्री एवं हिमवत्स के स्वयंसेवक उपस्थित थे। ■

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 44

शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास

आज के स्कूलों के बारे में समझ बनाने के लिए जरूरी है उनकी ऐतिहासिक पड़ताल

■ डॉ. पीटर ग्रे

आज जब हम देखते हैं कि हर जगह बच्चों को स्कूल भेजना कानूनी बाध्यता है, लगभग सभी स्कूल एक ही ढर्रे पर चलाये जाते हैं, और इन स्कूलों को स्थापित करने में समाज अच्छी खासी मशक्कत और खर्चा करते हैं, तो हमारा यह सोचना स्वाभाविक है कि इस सब के पीछे कोई नेक और वाजिब वजह जरूर होगी. शायद, अगर हम बच्चों को जबरन स्कूल न भेजें, या फिर स्कूल उस तरह काम न करें जैसे वे करते हैं, तो बच्चे बड़े होकर लायक नहीं बन पाएंगे. शायद कुछ बेहद बुद्धिमान लोगों ने बच्चों को समर्थ बनाने की यह तरकीब खोज निकाली होगी और उसे सही सिद्ध कर दिखाया होगा. या फिर बच्चों के विकास व शिक्षा के वैकल्पिक तरीके व्यावहारिक परीक्षणों में गलत साबित हुए होंगे.

अपने पिछले आलेखों में मैंने इस धारणा के विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत किये थे. खास तौर पर 13 अगस्त वाले आलेख में मैंने सडबरी स्कूल का जिक्र किया था. इस स्कूल में पिछले 40 वर्षों से मुख्यधारा स्कूलों के विपरीत बच्चे खुद अपने आप को शिक्षित करते हैं. इस स्कूल और इससे निकले हुए विद्यार्थियों पर किया गया अध्ययन बताता है कि लगभग सभी बच्चे बड़ों के दिशा-निर्देशों और टोका-टोकी के बिना, अपने खेलों तथा खोजों के सहारे अपने आप को शिक्षित करते हैं. और एक बड़े सांस्कृतिक परिवेश के भीतर सम्पूर्ण

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 45

व प्रभावशाली वयस्क के रूप में खुद को स्थापित करते हैं. दिशा-निर्देश व टोका-टोकी की जगह यह स्कूल बच्चों को एक समृद्ध वातावरण मुहैया कराता है, जिसमें खेलना, खोजना और लोकतंत्र का स्वाद जैसे तत्वों की भरमार है. मजेदार बात है कि यह सब परंपरागत स्कूल की तुलना में बहुत कम खर्चे और सबको साथ लेकर किया जाता है.

अगर हम यह जानना चाहें कि आज स्कूल जिस तरह दिखाई देते हैं, ऐसे क्यों हैं, तो हमें इस समझ से बाहर निकलना होगा कि वे एक तार्किक जरूरत व वैज्ञानिक सोच का परिणाम हैं. सच कहें तो ये अपने इतिहास की पैदावार हैं. वर्तमान स्कूली शिक्षा प्रणाली का तभी कोई औचित्य समझ में आता है, जब हम इसे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष में देखते हैं. इसलिए वर्तमान स्कूलों की आलोचना करने से पहले मैं यहाँ संक्षेप में शिक्षा के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत करना चाहता हूँ- मानव जाति के आरम्भ से आज तक. शैक्षिक इतिहास के अधिकांश विद्वान अपनी बातों को थोड़ा भिन्न शब्दावली में पेश करते हैं. लेकिन मैं समझता हूँ कि मेरी रूपरेखा से वे काफी हद तक सहमत होंगे. सच कहूं तो इस रूपरेखा को तैयार करने में मैंने इन विद्वानों के लेखों का पर्याप्त उपयोग किया है.

शुरूआत में, सैकड़ों हजारों वर्षों तक, बच्चे स्व-निर्देशित खेलों तथा खोज विधियों से खुद को प्रशिक्षित करते रहे.

मनुष्य प्रजाति के जैविक इतिहास की तुलना में स्कूल एकदम नई संस्थाएं हैं. सैकड़ों हजार वर्षों तक खेती के प्रारंभ से पूर्व, हमारे पूर्वज शिकारी संग्राहक थे. अपने पिछले आलेखों में मैंने मानवशास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया था कि घुमंतू संस्कृतियों के बच्चे किस तरह उन चीजों को अपने खेलों और खोजों के जरिये स्वयं सीख लेते थे, जिन्हें एक समर्थ वयस्क बनने के लिए सीखा जाना आवश्यक था. बच्चों में खेलने और खोजने की जबरदस्त इच्छा संभवतः शिकारी संग्राहक समाज के रूप में हमारे विकास की देन है, जो तात्कालिक समाज में शिक्षा की जरूरतों को पूरा करती थी. इन समाजों के वयस्क अपने बच्चों को खेलने और अपने आसपास को खोजने की बेरोकटोक आजादी देते थे. वे जानते थे कि बच्चों की स्वाभाविक शिक्षा के लिए ऐसा किया जाना जरूरी है.

खेती और बाद में उद्योगों के आगमन के बाद, बच्चे बलात् मजदूर बनाए जाने लगे. खेलने और खोजने की आजादी उनसे छीन ली गयी. मनमर्जी, जो कभी एक गुण मानी जाती थी, अब बुराई में गिनी जाने लगी, जिसका इलाज सिर्फ पिटाई था.

आज से लगभग 10 हजार वर्ष पहले दुनिया के कुछ हिस्सों में खेती की शुरूआत हुई और फिर यह बाकी जगह भी पहुंची. खेती ने लोगों की जीवन शैली को पूरी तरह बदल दिया. शिकारी संग्राहक जीवन शैली, कौशल एवं ज्ञान केन्द्रित थी, श्रम केन्द्रित नहीं. एक प्रभावी शिकारी संग्राहक बनने के लिए लोगों को उन वनस्पतियों व जीव-जंतुओं के बारे में पर्याप्त जानकारी हासिल करनी पड़ती थी, जिन पर वे निर्भर थे. इसके अलावा उनको अपने आवास क्षेत्र की बारीकियों को भी समझना पड़ता था. शिकार व भोजन संग्रह के लिए औजारों को बनाने और इस्तेमाल करने के हुनर में भी महारत हासिल करनी पड़ती थी. भोजन खोजने, उसका पीछा करने तथा इसके लिए पहल करने में क्षमतावान बनना जरूरी था. बेशक उन्हें घंटों

आज से लगभग 10 हजार वर्ष पहले दुनिया के कुछ हिस्सों में खेती की शुरूआत हुई और फिर यह बाकी जगह भी पहुंची. खेती ने लोगों की जीवन शैली को पूरी तरह बदल दिया. शिकारी संग्राहक जीवन शैली, कौशल एवं ज्ञान केन्द्रित थी, श्रम केन्द्रित नहीं. एक प्रभावी शिकारी संग्राहक बनने के लिए लोगों को उन वनस्पतियों व जीव-जंतुओं के बारे में पर्याप्त जानकारी हासिल करनी पड़ती थी, जिन पर वे निर्भर थे.

शैक्षिक आलेख

खेती ने जीवन की पूरी तस्वीर बदल डाली. खेती की मदद से लोग ज्यादा भोजन पैदा करने लगे, जिससे ज्यादा बच्चे पैदा करने की छूट मिल गयी. खेती ने लोगों का स्थाई बस्तियों में रह पाना संभव बनाया (या रहने को मजबूर किया). अब वे इधर उधर घूमने की बजाय अपने खेतों के आसपास रहने लगे. इससे प्रकारांतर में, संपत्ति की व्यवस्था का जन्म हुआ.

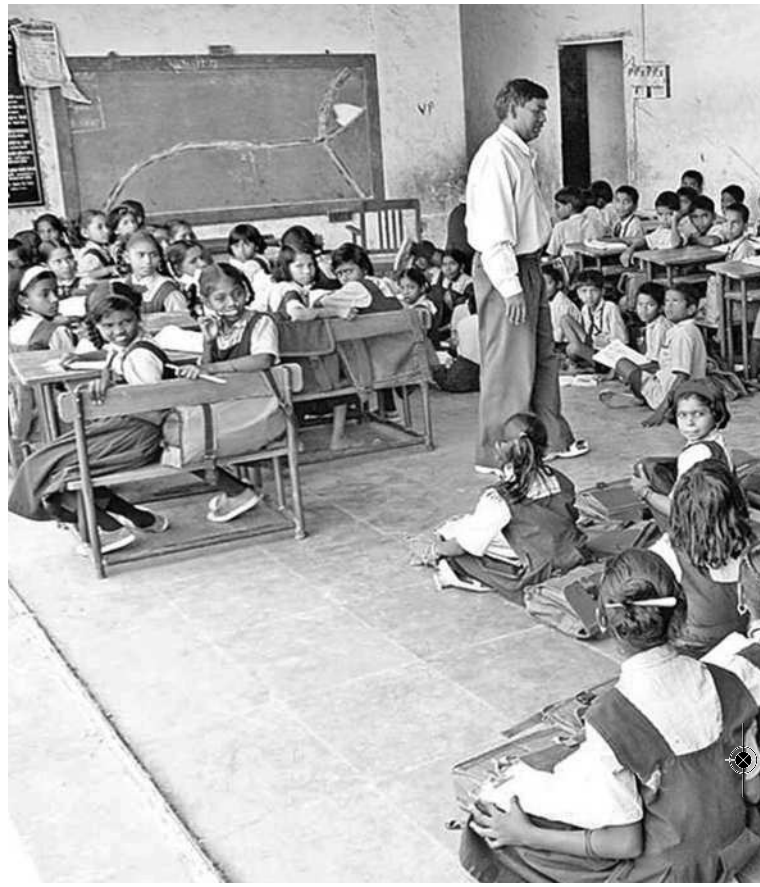

तक काम करने या खटने की जरूरत नहीं पड़ती थी, और उनके काम बेहद रोमांचक होते थे, उबाऊ नहीं. मानवशास्त्री बताते हैं कि शिकारी संग्राहक समूह काम और खेल के बीच फर्क नहीं समझते थे. दरअसल उनके लिए पूरा जीवन एक खेल की तरह था.

खेती ने जीवन की पूरी तस्वीर बदल डाली. खेती की मदद से लोग ज्यादा भोजन पैदा करने लगे, जिससे ज्यादा बच्चे पैदा करने की छूट मिल गयी. खेती ने लोगों का स्थाई बस्तियों में रह पाना संभव बनाया (या रहने को मजबूर किया). अब वे इधर उधर घूमने की बजाय अपने खेतों के आसपास रहने लगे. इससे प्रकारांतर में, संपत्ति की व्यवस्था का जन्म हुआ. मगर ये बदलाव मुफ्त में नहीं मिले, इनके लिए भारी श्रम का मूल्य चुकाना पड़ा. शिकारी संग्राहक जहाँ प्रकृति के उगाये हुए को बड़े कौशल से हासिल करते थे, वहीं किसानों को खेत जोतना, बुआई-निराई करना, फसल काटना और जानवर पालना जैसे अनगिनत श्रमसाध्य काम करने पड़ते थे. खेती की सफलता घंटों के अकुशल व बार बार दोहराए जाने वाले कामों पर निर्भर थी. अधिकतर काम बच्चों से करवाए जाते थे. बड़े परिवारों में बच्चे अपने छोटे भाई बहनों का पेट भरने के लिए खेतों में काम करते थे. उन्हें घर पर छोटे बच्चों की देखभाल भी करनी पड़ती थी. अपनी रुचि का काम करने की आजादी न मिलने की वजह से धीरे-धीरे बच्चों का जीवन बदलने लगा. अब उनका ज्यादा समय परिवार की जरूरतों को पूरा करने वाले श्रम में खटता था..

खेती व उससे जुड़े भू-स्वामित्व तथा संपत्ति संग्रह ने इतिहास में पहली बार आदमी-आदमी के बीच हैसियत में फर्क पैदा किया. जिन लोगों के पास जमीन नहीं थी वे भू-स्वामियों पर निर्भर हो गए. इसके अलावा, जमीदारों को यह भी पता चल गया कि वे दूसरों से अपना काम करवा कर अपनी संपत्ति में इजाफा कर सकते हैं. दासप्रथा और गुलामी के कई अन्य रूप सामने आने लगे. सम्पत्तिवान लोग उन पर निर्भर लोगों की मेहनत की बदौलत ज्यादा संपत्ति बटोरने लगे. इन सब के परिणामस्वरूप मध्य युग में सामंतवाद का आगमन हुआ. समाज पूरी तरह से सत्ता-सोपानों में बंट गया. सत्ता सोपान के शीर्ष पर राजा और उसके दरबारी थे, जबकि दासों और कामगारों की बड़ी आबादी सबसे निचले पायदान पर थी. समाज की बहुसंख्या, जिनमें बच्चे भी शामिल थे, पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ लिए गए. बच्चों के लिए सबसे बड़ा सबक था- आदेश का पालन, अपनी इच्छाओं को काबू में रखना और स्वामियों व सरकार का सदैव आदर करना. विद्रोही विचार रखने वालों के लिए मौत तय थी.

मध्य युग में बच्चों को पीट-पीट कर अपने सामने झुकाने में शक्तिशाली लोगों को जरा भी संकोच नहीं होता था. उदहारण के लिए, 14वीं सदी के उत्तरार्ध या 15वीं सदी की शुरूआत के एक दस्तावेज के मुताबिक एक फ्रांसीसी काउंट ने शाही लड़ाकों को सलाह दी कि वे नौकर रखने के लिए लड़कों को सात-आठ साल की उम्र में ही चुन लें और उन्हें इतना पीटें कि वे मालिक के आदेश को ठुकराने का खयाल तक दिमाग में न लाएं. दस्तावेज आगे सुझाता है कि लड़के से रोजाना क्या-क्या काम लिए जाने चाहिए और रात को उसे शिकारी कुत्तों के बाड़े की छत पर सुलाना

खेती व उससे जुड़े भू-स्वामित्व तथा संपत्ति संग्रह ने इतिहास में पहली बार आदमी-आदमी के बीच हैसियत में फर्क पैदा किया. जिन लोगों के पास जमीन नहीं थी वे भू-स्वामियों पर निर्भर हो गए. इसके अलावा, जमीदारों को यह भी पता चल गया कि वे दूसरों से अपना काम करवा कर अपनी संपत्ति में इजाफा कर सकते हैं. दासप्रथा और गुलामी के कई अन्य रूप सामने आने लगे.

चाहिए ताकि वह कुत्तों की आकस्मिक जरूरतों को पूरा कर सके.

उद्योगों के उदय तथा एक नए शोषक वर्ग के जन्म के साथ सामंतवाद धीरे-धीरे समाप्त हो गया लेकिन ज्यादातर बच्चों की जिन्दगी से दुखों का अंत नहीं हुआ. नए व्यापारियों को भी पुराने जमींदारों की तरह श्रमिकों की जरूरत थी. और वे कम से कम मेहनताने में ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना चाहते थे. आज हर कोई सामंतवाद के गर्भ से जन्मे शोषण तंत्र को जानता है. दुनिया के अधिकांश भाग पर यह तंत्र आज भी कायम है. लोग, जिनमें बच्चे भी शामिल हैं, जिन्दा रहने की खातिर ज्यादातर वक्त काम करते हैं. हफ्ते में सातों दिन... जानवरों जैसे हालात में. बच्चों को खुले हवादार खेतों की जगह, जहाँ उन्हें कभी कभार खेलने का मौका मिल जाता था, अब अँधेरी, बदबूदार व गन्दी फैक्टरियों में काम करना पड़ता था. इंग्लैंड में गरीब तबकों के ओवरसीयर, कंगाल घरों के बच्चों को फैक्टरियों में ले आते थे, जहाँ उनके साथ गुलामों जैसा बर्ताव होता था. ऐसे हजारों बच्चे हर वर्ष बीमारी, भूख और कमजोरी की वजह से दम तोड़ देते थे. 19वीं सदी में तब तक यह चलता रहा, जब तक इंग्लैंड ने बाल श्रम पर कानून नहीं बना दिया. 1883 में एक नया कानून बना, जिसके मुताबिक कपड़ा उद्योग में 9 वर्ष से कम उम्र के बच्चे से काम लेने पर पाबन्दी लगा दी गयी. इसके अलावा 10 से 12 वर्ष के बच्चे के लिए अधिकतम साप्ताहिक कार्य अवधि 48 घंटे तथा 13-17 वर्ष के लिए 69 घंटे कर दी गई.

कुल मिलाकर, खेती के आगमन के बाद कई हजार वर्षों के दौरान बच्चों की शिक्षा का अर्थ था- उनकी इच्छाओं को तहस-नहस कर उन्हें अच्छा श्रमिक बनाना. एक अच्छे बच्चे का मतलब था- एक आज्ञाकारी बच्चा, जो खेलने और खोजने की अपनी सहज वृत्ति पर लगाम लगा सके और मालिक के आदेशों का आँख मूँद कर पालन करे. ऐसी शिक्षा, सौभाग्यवश कभी कामयाब नहीं हो पाई. खेलने और खोजने की मानवीय वृत्तियां इतनी जबरदस्त होती हैं कि इन्हें किसी बच्चे के दिलो-दिमाग से रगेदा नहीं जा सकता. मगर इस पूरे युग का शिक्षा दर्शन शिकारी संग्राहक समाजों के सैकड़ों-हजारों वर्षों की समझ के पूरी तरह विपरीत था.

अनेक कारणों से- जिनमें कुछ धार्मिक थे और कुछ धर्म निरपेक्ष, बाध्यकारी सार्विक शिक्षा का विचार धीरे-धीरे फैलने लगा. शिक्षा 'दिमागों में ठूंसने' का पर्याय बन गई.

जैसे-जैसे उद्योगों का विकास होता गया और यह अधिकाधिक स्वचालित होते गए. दुनिया के कई हिस्सों में बाल श्रम की जरूरत घटती चली गई. इसकी जगह यह विचार जगह बनाने लगा कि बचपन सीखने की उम्र है. और इस तरह सीखने की जगह के रूप में स्कूल खड़े किये जाने लगे. सार्विक एवं बाध्यकारी सार्वजानिक शिक्षा का विचार और व्यवहार 16वीं सदी के पूर्वार्ध में यूरोप में जन्मा और 19वीं सदी तक इसका काफी विस्तार हो गया. यह एक ऐसा विचार था, जिसे समाज में कई पैरोकार मिले. बच्चों को कौन से पाठ पढ़ने चाहिए, इसको लेकर भी सबके अपने-अपने एजेंडे थे.

सार्विक शिक्षा के लिए सबसे ज्यादा जोर नए-नए उभरते प्रोटेस्टेंट धर्म ने लगाया. मार्टिन लूथर ने घोषणा की कि किसी व्यक्ति के लिए मुक्ति का मार्ग धर्मग्रंथों को खुद उसके द्वारा पढ़े

शैक्षिक आलेख

जाने से ही खुल सकता है. यह सीख लूथर तक ही खत्म नहीं हो गई. तब की समझ यही थी कि हर आदमी को पढ़ना सीखना चाहिए और यह जानना चाहिए कि अंतिम सत्य धर्मग्रंथों में ही मिल सकता है तथा मुक्ति का मार्ग एकमात्र इस सत्य को जानने में निहित है. लूथर व दूसरे सुधारवादी नेताओं ने सार्वजानिक शिक्षा को ईसाई धार्मिक कर्तव्य बताते हुए जोर दिया कि नर्क की लपटों से अपनी आत्मा को बचाने का यही एक रास्ता है. 17वीं सदी के अंतिम वर्षों तक जर्मनी, जो स्कूलों के विकास में सबसे आगे था, के अधिकतर राज्यों में बच्चों को स्कूल भेजना कानूनन अनिवार्य बना दिया गया. लेकिन इन स्कूलों को सरकार नहीं बल्कि लूथेरियाई चर्च चलाते थे.

अमेरिका में, 17वीं सदी के मध्य में, मैसाचुसेट्स पहला ऐसा राज्य बना जहाँ स्कूली शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी. इसका उद्देश्य घोषित तौर पर बच्चों को धर्मनिष्ठ बनाना था. 1690 की शुरूआत तक मैसाचुसेट्स व इसके आस-पास की कॉलोनियों के बच्चे न्यू इंग्लेंड प्राइमर (जिसे न्यू इंग्लेंड की लिटल बाइबल भी कहा जाता था) पढ़ना सीख चुके थे. इस पुस्तक में अक्षर ज्ञान सिखाने वाले छोटे-छोटे बाल गीत थे, जो कुछ इस तरह से शुरू होते थे- 'इन एडम्स फाल, वी सिन्ड ऑल.' और इस तरह खत्म होते थे- 'जाचेयस ही, डिड क्लाइम्ब ट्री, हिज लॉर्ड टू सी.' पुस्तक में ईश प्रार्थना, ईसाई धर्म के सिद्धांत, दस धमार्देश और बच्चों में ईश्वर का डर व बड़ों के प्रति आज्ञाकारिता का जज्बा सिखाने वाले कई पाठ थे.

उद्योगपतियों को आज्ञाकारी कामगार तैयार करने में स्कूल की क्षमता का अंदाजा लगाने में देर नहीं लगी. उनके लिए समय की पाबन्दी, आदेशों का पालन, लंबे समय तक कठिन काम करने का धैर्य और पढ़ने-लिखने की न्यूनतम क्षमता जैसे गुण सबसे जरूरी थे. उनकी नजर में (हालांकि उन्होंने इस तरह इसे कहा नहीं) स्कूल का पाठ जितना उबाऊ हो, उतना अच्छा.

जैसे-जैसे राष्ट्र जुड़ते और ज्यादा से ज्यादा केंद्रीकृत होते गए, राष्ट्रवादी नेता स्कूली शिक्षा को वफादार देशभक्त और भावी सैनिक तैयार करने के माध्यम के रूप में देखने लगे. उनके अनुसार मातृभूमि की महान गाथाएं, हैरतअंगेज उपलब्धियां और देश के संस्थापकों व नेताओं के नैतिक उपदेश तथा बाहरी दुष्ट ताकतों से देशरक्षा की जरूरत जैसे पाठ बच्चों को अवश्य पढ़ाए जाने चाहिए.

स्कूली इतिहास की इस टेढ़ी-मेढ़ी राह में कुछ ऐसे सुधारक भी आये जिन्हें बच्चों की सचमुच परवाह थी. उनकी बातें आज भी हमारे कानों में गूंजती हैं. इन लोगों ने स्कूलों को एक ऐसी जगह के रूप में चिन्हित किया, जहाँ बच्चों को बाहर की नुकसानदेह आबो-हवा से बचाया जा सकता है और उन्हें एक समर्थ व सक्षम नागरिक के रूप में विकसित होने के लिए आवश्यक नैतिक एवं बौद्धिक आधार दिया जा सकती है. उनके मुताबिक बच्चों को नैतिक पाठ एवं अनुशासन, जैसे- लैटिन व गणित आदि पढ़ाए

जाने चाहिए ताकि उनके दिमाग की कसरत हो और वे स्कूल से बुद्धिजीवी बनकर निकलें.

इस तरह हर कोई स्कूल की स्थापना के पक्ष में था और वहां क्या पढ़ाया जाना चाहिए, इस बारे में भी उसका स्पष्ट नजरिया था. ऐसे में जाहिर सी बात है, कोई भी बच्चों को अपना रास्ता खुद बनाने की इजाजत देने को तैयार नहीं था. यहाँ तक कि सीखने के अत्यंत समृद्ध माहौल में भी बड़े वही पढ़ाना चाहते थे, जो उन्हें बच्चों के लिए जरूरी लगता था. वे तयशुदा मूल्यों और तौर-तरीकों को बच्चों के 'दिमाग में बिठाने या रोपने वाली प्रक्रिया' के अर्थ में शिक्षा को देखते थे. तब से आज तक बच्चों के दिमाग में ज्ञान रोपने की बस यही एक-मात्र विधि चलती आ रही है- जबरन दोहराना (रट्टा मारना) और दिमाग में घुसा कि नहीं, यह जांचने के लिए इम्तहान लेना.

स्कूली शिक्षा के विस्तार के साथ लोगों में यह सोच जड़ जमाने लगा कि सीखना बच्चों का काम है. बीते जमाने में बच्चों के साथ खेतों और फैक्टरियों में काम करवाने के लिए की जाने जोर-जबरदस्ती अब स्वाभाविक रूप से कक्षाओं में पहुँच गयी.

पाठों को दोहराना व याद रखना बच्चों के लिए एक कठिन काम था. उनकी सहज वृत्ति उन्हें आजादी से खेलने और दुनिया को स्वयं अपने प्रयासों से खोजने के लिए प्रेरित करती थी. जिस तरह खेतों व फैक्टरियों में काम करने के लिए बच्चे आसानी से तैयार नहीं हुए, स्कूल भेजे जाने का भी उन्होंने वैसे ही विरोध किया. इस प्रयास में शामिल बड़ों के लिए यह कोई हैरानी की बात नहीं थी. इतिहास के इस मुकाम पर, बच्चों की इच्छा का कोई मतलब होता है, यह बात किसी के दिमाग में भला आती भी कैसे! हर कोई यही सोचता था कि बच्चों को स्कूल भेजने के लिए उनकी मनमर्जी पर सख्ती से लगाम लगानी चाहिए. हर तरह के दंड को शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाता था. कुछ स्कूलों में बच्चों के खेलने के लिए अलग से अवकाश (मध्यांतर) की व्यवस्था थी लेकिन खेलों को कभी भी सीखने का माध्यम नहीं समझा जाता था. कक्षा के भीतर तो खेल पढ़ाई का घोषित दुश्मन ही था.

अठाहरवीं सदी के स्कूलों में खेलों के प्रति अधिकारियों का रवैया जॉन वैस्ली के स्कूली नियमों में कुछ इस तरह प्रकट हुआः 'जैसा कि हमारे यहाँ कोई खेल दिवस नहीं होता, हम खेल के लिए न तो कोई समय तय करते हैं न कोई दिन. क्योंकि जो बच्चा खेलता है वह बड़ा होकर भी खेलता रह जाता है.'

किसी जमाने में बच्चों से खेतों व फैक्टरियों में जबरन काम करवाने के लिए बर्बर तरीके उपयोग में लाए जाते थे. वही तरीके स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने के लिए इस्तेमाल होने लगे. कम पगार पाने वाले, कई अप्रशिक्षित शिक्षक तो साफ तौर पर परपीड़क थे. जर्मनी में एक शिक्षक ने अपने 51 वर्ष के कार्यकाल में बच्चों की पिटाई का पूरा रिकॉर्ड रखा, जिसके मुताबिक उसने बच्चों को लोहे की छड़ से 9,11,526 बार, बेंत से 1,24,010 बार, पटरी

शैक्षिक आलेख

से 20,989 बार, हाथ से 1,36,715 बार पीटा. 10,235 बार उनका मुंह तोड़ा, 7,905 बार कान पर मुक्के जमाये और 11,18,800 बार उनकी खोपड़ी ठोकी. जाहिर है शिक्षक को उसके द्वारा दी गयी शिक्षा पर गर्व भी होगा.

अठाहरवीं सदी में मैसाचुसेट्स में मंत्री रहे एक जाने-माने शख्स जॉन बर्नाड ने अपनी आत्मकथा में बड़े प्रशंसापूर्वक लिखा है कि उन्हें उनके स्कूल टीचर नियमित रूप से पीटते थे. वह खेलने की अपनी बेलगाम आदत की वजह से मार खाते थे. इसके अलावा जब वह कक्षा में सीख नहीं पाते थे, तब मार खाते थे. इतना ही नहीं, वह तब भी पिटते थे जब उनके सहपाठी सीखने में नाकामयाब हो जाते थे. क्योंकि वह पढ़ाई में अव्वल थे, इसलिए उन पर औरों को सिखाने की भी जिम्मेदारी डाली गयी थी. इसलिए जब भी कोई सहपाठी जवाब नहीं देता था, बर्नाड साहब को मार खानी पड़ती थी. लेकिन उन्हें इस पिटाई से कोई शिकायत नहीं थी, शिकायत थी तो अपने उस शरारती सहपाठी से, जो उन्हें पिटवाने के लिए जान बूझकर सवाल का जवाब नहीं देता था. उन्होंने इस समस्या का भी तोड़ निकाल लिया. एक दिन स्कूल से बाद उन्होंने इस सहपाठी की जमकर तुड़ाई की और साथ में यह हिदायत भी दी कि भविष्य में उसकी वजह से उन्हें पिटना पड़ा तो उसकी खैर नहीं. वे शानदार पुराने दिन...!

हाल के दिनों में स्कूली पढ़ाई के तौर-तरीके काफी हद तक बदल गए हैं. लेकिन उनके पीछे का बुनियादी विचार नहीं बदला है. सीखना, आज भी बच्चों का ही काम समझा जाता है और बच्चों से यह काम करवाने के लिए सख्त तौर-तरीके अब भी इस्तेमाल होते हैं.

19वीं और 20वीं सदी में सार्वजानिक शिक्षा उस दिशा की ओर बढ़ी, जैसी आज हम इसे पाते हैं. अनुशासन के तौर-तरीके अधिक मानवीय होते गए. काफी हद तक पिटाई स्कूलों से गायब हो गयी. पाठ्यसामग्री पहले से ज्यादा धर्मनिरपेक्ष हो गयी. ज्ञान के विस्तार के साथ-साथ पाठ्यक्रम का विस्तार होता गया. विषयों की सूची लगातार लंबी होती चली गयी. इसके अलावा स्कूल के घंटों, दिनों और बाध्यकारी स्कूली वर्षों में भी इजाफा होता चला गया. खेत, फैक्टरी या घर में करवाए जाने वाले काम की जगह अब स्कूल ने ले ली. पढ़ाई करना बच्चे का प्राथमिक काम बन गया. जिस तरह बड़े रोज 8 घंटे अपने रोजगार की जगह जाते हैं, ठीक उसी तरह आज बच्चों को भी रोजाना 6 घंटे स्कूल में बिताने पड़ते हैं. इसके बाद वे एक घंटा या कुछ ज्यादा समय होमवर्क में लगाते हैं और इससे कहीं ज्यादा स्कूल से बाहर ट्यूशन पढ़ने में. समय के साथ-साथ बच्चों का जीवन स्कूली पाठ्यक्रम से अधिकाधिक परिभाषित और नियंत्रित होता चला गया है. पूरी दुनिया में आज बच्चों की पहचान उनकी स्कूली कक्षा से की जाने लगी है. ठीक उसी तरह जैसे बड़ों की पहचान उनकी नौकरी या करियर से होती है.

स्कूल आज पहले जैसे कठोर नहीं रहे, लेकिन सीखने के बारे में कुछ प्रस्थापनाएँ आज भी जस की तस हैं. मसलन-सीखना एक कठिन काम है, जिसे बच्चों से पूरी सख्ती से करवाया जाना चाहिए. बच्चों को अपनी मर्जी से तय की गई गतिविधियों से कुदरतन शिक्षा नहीं मिलती. इसके लिए उन्हें अनुशासित ढंग से पढ़ाना चाहिए. निर्धारित पाठ जिन्हें पढ़ना बच्चे के लिए जरूरी है, वे पेशेवर शिक्षाविदों द्वारा ही तैयार किये जाने चाहिए, खुद बच्चों द्वारा नहीं. इसलिए देखा जाय तो शिक्षा आज भी 'दिमाग में ठूंसने' जैसी ही चीज है (हालांकि शिक्षाविद आज इस शब्द को इस्तेमाल करने से परहेज करते हैं और इसके जगह 'डिस्कवरी' जैसे शब्द बोलते हैं).

अपने पाठों को बच्चों के लिए आनंददाई बनाने के लिए आज के चतुर शिक्षाविद 'खेल' को एक हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं. स्कूलों में बच्चों को इंटरवल के नाम पर कुछ खाली समय भी दिया जाता है (हालांकि हाल के वर्षों में इसमें कटौती भी हुई है). मगर बच्चों के खुद के खेलों को शिक्षा की बुनियाद के रूप में अब भी पूरी तरह अपर्याप्त समझा जाता है. बच्चे, जिनमें खेलने की ख्वाहिश इतनी जबरदस्त होती है कि वे खामोश नहीं बैठ सकते, आज पीटे नहीं जाते, लेकिन अब उनका इलाज किया जाता है.

आज स्कूल ऐसी जगह है जहाँ बच्चे उन चीजों के बीच फर्क करना सीखते थे, जिन्हें शिकारी संग्राहक कभी नहीं जान पाए-काम और खेल के बीच फर्क. शिक्षक बच्चों से कहते हैं, 'पहले काम पूरा करो, इसके बाद तुम्हें खेलने की इजाजत मिलेगी.' इस सन्देश से स्पष्ट है कि काम, जिसमें स्कूल की समूची पढ़ाई शामिल है, ऐसी चीज है, जिसे कोई बच्चा पसंद नहीं करता लेकिन उसे करना पड़ता है. और खेल, जिसे हर बच्चा पसंद करता है, समय की बर्बादी समझा जाता है. हमारे स्कूली तौर-तरीकों का यही सबसे अहम पाठ है. अगर बच्चे स्कूल में कुछ भी नहीं सीखते, तो भी उन्हें काम व खेल के बीच फर्क समझ में आ जाता है और वे जानते हैं कि पढ़ना काम होता है, खेलना नहीं.

इस आलेख में मैंने यह समझाने का प्रयास किया है कि मानव इतिहास ने किस तरह स्कूलों को आज का स्वरूप प्रदान किया. अपने अगले आलेख में मैं यह जानने का प्रयास करूंगा कि स्कूलों को सुधारने के आधुनिक प्रयास बुनियादी तौर पर क्यों अप्रभावी साबित हुए.

लेखक प्रो. पीटर ग्रे अमेरिका के बोस्टन कॉलेज में रिसर्च प्रोफेसर हैं और शिक्षा मनोविज्ञान के विश्व प्रसिद्ध अध्येता हैं।

(अनुवाद: आशुतोष उपाध्याय)

Himvant Magazine_2022-23_Himvats Magazine 08-12-2022 14:54 Page 51

तिवारी स्वीट्स एण्ड रेस्टोरेंट

बस स्टेशन, चम्पावत

उच्च क्वालिटी की बाल मिठाई, चॉकलेट, बर्फी और बंगाली मिठाइयों का एकमात्र विश्वसनीय प्रतिष्ठान एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त

तिवारी होटल

प्रो. प्रकाश तिवारी

मो.: 9411038192

RAJENDER GAHTORI

C.M. Club Member

L.I.C OF INDIA

LIC

भारतीय जीवन बीमा निगम

LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

Premium Collection Point

Near, Karnatak Hospital, Champawat

M: 9411546795/9837393989

प्रो. राजेन्द्र गहतोड़ी

निकट: कर्नाटक अस्पताल, चम्पावत

खर्कवाल मेडिकल स्टोर

मै. आर.डी. खर्कवाल एण्ड सन्स

हमारे यहॉं अंग्रेजी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक एवं जानवरों की दवाइयां उपलब्ध हैं

: प्रतिष्ठान:

1. खड़ी बाजार, निकट: स्टेट बैंक, चम्पावत
2. लोहाघाट रोड, चम्पावत

प्रो. हरीश खर्कवाल

फोन न.: 05965 230255/05965 230256

23 YEARS OF EXCELLENCE

"A Leading Group of Institutes of Uttarakhand"

Award of Excellence by CEGR
Top Institutes of India by GHRDC
Top Institutes of India by The Week
Top Institutes of India by OUTLOOK
Top 5 value for money Institutes of India by India Today

AMRAPALI
GROUP OF INSTITUTES

16000+ ALUMNI | SAFE ENVIRONMENT | HIGHLY RANKED | EXPERIENCED FACULTY | EXCELLENT PLACEMENTS | 3000+ STUDENTS

Courses

- Commerce & Business Management: **MBA | BBA | B.Com [H]**
- Hotel Management: **BHMCT | BHM | DHMCT | DHA | DHM**
- Computer Applications : **MCA | BCA**
- Engineering: **B. Tech.** (CSE, ME, AI & DS*, AI & ML*) | **Polytechnic** (Mechanical, Electrical)
- Pharmacy & Sciences: **B. Pharm | D. Pharm**
- Education: **B. Ed.**

Scholarships upto 100%

- Meritorious Students
- Female Candidates
- Uttarakhand Domicile
- Wards of Martyrs, Defence, Paramilitary, Police Home Guards, Para Police (Serving & Retired)
- Social Welfare Scholarships
- Tuition Fee Waiver (as per Govt Norms)
- Additional Annual Scholarship for Toppers
- Education Loan Support

Our Recruiters

HYATT, Oberoi, JW Marriott, DoubleTree, ITC Sonar, Westin, Sheraton, Trident, The Leela, Meridien, Fortune, Samkwang, Wipro, St Regis, Marriott, ITC Hotels, TCS, Mindtree, Infosys, Capgemini, accenture, Zoho, nagarro, Deloitte., DeFacto, ARTECH, Gateway, Rubico, BYJU'S, UnifyCloud, aapna, OnGraph Technologies, smartData, nyalazone, Rapidsoft, cloudEQ, Zentrix, neerinfo, Flyhomes, wobot, Acutec, IntelliPaat, Midas

and many more...

Wi-Fi Campus

Buses available from Haldwani, Golapar, Kashipur, Ramnagar, Rudrapur, Pantnagar and other nearby places.

Separate Hostel facility available for boys and girls.

REGISTER ONLINE @

Our Information Centres:
Almora - 9759693700
Pithoragarh - 9759693800

www.amrapali.ac.in

Contact Us @ **9759670100, 9759670200, 9759670300, 9759670400, 9759670500**

SHIKSHA NAGAR, KALADHUNGI ROAD, HALDWANI, DISTT. - NAINITAL, UTTARAKHAND-263139, admission@amrapali.ac.in